॥ कविवचनसुधा ॥

जिसको

श्रीयुत ठाकुर महेश्वरबक्ससिंह तालुके-
दार रामपुर मथुरा जिला सीतापुर
की आज्ञानुसार बाबू रामकृष्ण वर्म्मा
ने कविताप्रेमी महाशयों के
चित्तविनोदार्थ निज

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित किया।

१९०६ ई०।
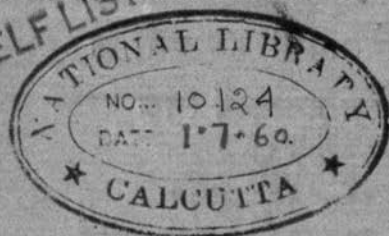
॥ श्रीः ॥

कविवचनसुधा।

दोहा।

श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि।
बरणौं रघुपति बिसद जस जो दायकफलचारि॥

सवैया।

अवधेश के द्वार सकार गई सुत गोद मैं भूपति लै निकसे।
अवलोकि हौं सोच विमोचन सो ठगि सी रही जे न ठगे धिक से॥
तुलसी मनरंजन रंजनि अंजन नैन सुखंजन जाति कसे।
सजनी शशि तैं सम शील उभै नवनील सरोरुह से बिकसे॥२॥

कवित्त।

भूषित विभूति सिद्धि सम्पति प्रसूति सितकण्ठ उपवीत सेष सेखर शरीर है। कालहू के काल पै कृपाल सदा दासन पै उदित उदारता हमेस हुलसी रहै॥ औध चंचरीक चित पुंडरीक पायन पै निन गुनगायन को रसना रसी रहै। मंदाकिनी मौलि अंक मण्डित मृणाली मंजु मूरति महेश मेरे मानस बसी रहै॥ ३॥

सुमनोज मये उनये घन मैं दमकैं दशहूं दिशि दामिनियां।
फहराय फुही रस मैं बरसैं जगी जूगुनू जोतिन जामिनियां॥
महिपाल जू तैसेही सीरी समीर सुगन्धित मन्द है गामिनियां।
अस पावस अंक पियाके अली बनि सोई भली विधि भामिनियां॥ ४॥

बन बागन में पपिहा करि कूक अनूक ह्वै बान से मेरत ये ।
महिपाल मनोज मनोजमई जुत जूगुनु जामिनि हेरत ये ॥
कुल लाज के साजन को सजिये त्यहि ते बजि कै मन फेरत ये ।
घनघोर घटा घुमड़ाय अरी घहराय घरी घरी घेरत ये ॥ ५ ॥

चन्दमुख चमक चहूंघा चौक चौतरा के बाहिरै लौं बगरं मरीची भांति भलिकै । कोमल कपोल पै डगर भृकुटी की कोर बलित बिराजी लट तार सी बिछलि कै ॥ कबि लछिराम स्याम सुन्दर सराहैं किमि समगन साज मैं रही हौं कर मलि कै । कामधनु कगर कनक दरपर मानों लोटति लपटि लोल पन्नगी मचलि कै ॥ ६ ॥

आरसबलित बैठी सुमन की सेज पर प्यारी परभात नील नेह सरसन तैं । मरगजी कंचुकी सुरङ्ग पट स्वेदकन तैसे बर बदन बिराजै बुन्द बन तैं ॥ कर के सँभारन में सीसफूल फैल्यो खुलि पांखुरी बिराजै लछिराम या समन तैं । मोर काम कमल जुगल जोरि मानो मनि चूर कै बगरि गई कालीनाग फन तैं ॥ ७ ॥

कुललाज जँजीरन सों जकर्‌यो जुलमी तऊ उधम ठानत है ।
तन मैन महावत ऐड़ के आंकुस ताहू की आनि न आनत है ॥
झुकि झूमि झकै उझकै न रुकै परमेस जू जोम न जानत है ।
पिय रावरो रूप बिलोके बिना मन मेरो मतङ्ग न मानत है ॥८॥

मदन-मसाल कैधौं चम्पकली-माल कैधौं भानु की प्रभा है कैधौं सोहै छबि जाल सी । रति अंस सार कैधौं मैन कामनारि कैधौं सम्पावन क्रान्ति कैधौं चित्त हरि आलसी ॥ रमाकर मूल

कैधौं गिरा हरमूल कैधौं शिवा शशिगार कैधौं भव बृज माल सी। ऐसी बाल लाल कैधौं लाल लाल लाल कैधौं राधिका विसाल कैधौं हरि-हियमाल सी ॥ ९ ॥

चन्दन चरचि चारु मोतिन को उर चारु चली अभिचारु गति मायल मराल सी। केसरि रँग्या दुकुल हांसी में झरत फूल सौतिन करत सूल अली चन्द बाल सी ॥ गहगही चांदनी उठत महमही अङ्ग लहलही ललित लता है छवि जाल सी। घूंघट उठाये चहुँओरन उजास होत जात शिवनाथ कैधौं मदन मसाल सी ॥ १० ॥

सवैया।

बेली घनी घर के ढिग मैं अलबेली करै नित जाइ बिहारन।
सासु औ नन्द सबै सुख देत हैं भूषित है उर हीर के हारन ॥
कन्त न होत रुसन्त कबौं कबिबंस भरो गृह दूध भँडारन।
आजुहि कोकिल कैरव बोलत प्यारीके पीरी परी केहि कारन ॥
देखुरी देखु या ग्वालि गवांरिनि नैकौ नहीं थिरता गहती है।
आनन्द सी रघुनाथ पगी पगी रङ्गन सी फिरते रहती है ॥
कान सों कान तरयोना सु छ्वै करि ऐसी कछू छबिको गहती है।
जोबन आइबे की महिमा अंखियां मनो कानन सों कहती है ॥

॥ दोहा ॥

कनकलता श्रीफलफरी, रही बिजनबन फूलि।
ताहि तजत क्यों बावरे, सुअलि सांवरे भूलि ॥

कवित्त ।

राधे को रसाल रूप कहांलौं बखान करौं हरियाल उपमा बिसाल सुखकन्द पर । नूपुर बजत पग भूपुर धरत गति गुंजनकी मौंर कैसी मंजु अरबिन्द पर ॥ बिम्ब से प्रवाल से गुलाल से अधर पर झूमि रह्यो झूमका मयूर ज्यों अनन्द पर । गुंदे लाल तार से सेवार से सरस बार फूलि रह्यो मानों इश्कपेंचा चारु चन्द पर ॥ १४ ॥

मरकत सूत कैधौं पन्नगी के पूत कैधौं राजत अभूत तमराज के से तार हैं । मकतूल गुनग्राम सोभित सरस स्याम काम मृग कानन कै कुहू के कुमार हैं ॥ कोप के किरनि कै जलज नलिनी के जन्तु उपमा अनन्त चारु चवर सिंगार हैं । कारे सटकारे भीजे सोंधमे सुगन्ध बास ऐसे बलभद्र नव बार तेरे बार हैं ॥ १५ ॥

सुजनी चिकन की बिछाये डोरी लाललाल ताकी मखमल की सी सोभा दरबार हैं । तिरछी चितौनि येतो उदबेगी दौरिजात बारुनी दुरान आगे खड़े चोबदार हैं ॥ बकसी देवान हुओ कोय लाग कानन सों अंजन के दसखत सिद्ध कारबार हैं । लाज औ मनोज ये हुजूर के खवास खास नागरि के नैन कै नबाव नामदार हैं ॥ १६ ॥

कमल पै चम्पकली तापै मुकता की फली तापै कदली के खम्भ तापै हेम भृङ्गी बर । तापै भरो पानिप सरोवर लहरि लेत तापै एक कचनार दोय कली सोने कर ॥ तापै हेमसाखा दोय पल्लव प्रवाल कीन्हे तापर कनक कम्बु तापर रसाल फर ।

तापै बिम्ब तापै कीर तापै अरबिन्द धनु तापै इन्दु तापै घन तापै सात्विकी डगर ॥ १७ ॥

कुन्द की कली सी दन्तपंक्ति कौमुदी सी बिच बिच रेख मीसी की अमी सी सी गटकि जात । बीसी त्यों रची सी बिरची सी बरछी सी तिरछी सी आंखियां वै सफरी सी त्यों फरकि जात ॥ सर की नदी सी दया मानसिन्धु की सी मनो चकित खरी सी रति डरी सी सरकि जात । चौकन्द फँदी सी भौंहैं कसी सी ससी सी दुति जाकी सीसी करिबे मैं सुधा सीसी सी ढरकि जात ॥ १८ ॥

नखत से मोती नथबन्दिया जराऊ जरी तरल तरयौननकी आभा मुख फूटी है । देवकीनँदन कहै तैसिये सुचम्पकली पंचलरी मंत्र गति मोहनी की लूटी है ॥ चूनरी कुसुम्भी रङ्ग ऊनरी परत तन कलितकिनारी की ललित रस जूटी है । बाल तेरी छाती पै हमेल छबिछूटी मानो लाल दरियाई बीच चन्दारबूटी है ॥१९॥

दीन्हो दई रूप कैधौं याही को सकेलि सब जाकी बेस बातैं बस बाल मै करैया सी । आंख अलबेली की अनोखी अरबिन्द ऐसी बान ऐसी लेखी परि प्रानन हरैया सी ॥ सुकबि निहाल कहै मेनका सुकेसी ऐसी केतिको खड़ी है जाके पायन परैया सी । महल महान पर बैठी चारु चन्द्रमा सी वाके आसपास और तरुनी तरैया सी ॥ २० ॥

सवैया ।

आंगन पौरि लौं दौरि गई सुनि बांसुरी की धुनि बाजन लागी ।
बेनी अचेत परी जबते तबते बवरी कोइ लाज न लागी ॥

तोरन तोलिबे को तरुनी सुहने हरिको सखि लाजन लागी ।
काल ही काल दसी सी तिया फिरि आजु वही धुनि बाजन लागी ॥
मनमें थिर ह्वै करि ध्यान सुजानको आमन में तन तूरति री ।
झपकी अखियां न खुले प्रहलाद पिया बतियां न बिसूरति री ॥
मुख चन्दकी ओर चकोरी लिया मनमें अभिलाखन पूरति री ।
बलि हौं तो बुलावति बोलै नहीं वह ह्वै गई सांवरी मूरति री २२

कवित्त ।

कैधौं रतिपति गति गेह के रुचिर खम्भ अमल अनूप रूप हेरे रूपजात के । रतिके अरम्भ पिय भुजपरिरम्भन को सुखद सवांरे बिधि बुधि अवदात के ॥ कलानिधि बनक कनक कदलीन हू के हीन करि कलभ मलीन गति मात के । जघन सघन वोट आवरनहू की मन मुनि बस करन हरन युधि सात के ॥ २३ ॥

सोहैं मेचमाले से तमाल दुति काले अति अमित कसाले पले तेरे ढिग चाले री । लखिये खुसाल हाले २ पति माले कोले करि के अचाले नहिं लाले सो ये जाले री ॥ बहुत रसाले बनमाले गले डाले हले चित अन्तराले कंच फाले सो हटा ले री । भाल की सी नाले कंजकेतू मी बचाले बृजवाले नन्दलाले को हियाले में लगा ले री ॥ २४ ॥

ऐसे बान मैन के न देखे एनमैन के जगैया रैन सैन के जितैया सौति सीन के । कमल कुलीनन के सकुली करनहार कानन लौं कोयन के लोयन रँगीन के ॥ भनत कबिन्द्र भावती क मैन जावक

से पेले प्रेम पायक से नायक नवीन के । सांचे सो अमीन के अमीन मानो मीन के सराहै को खगीन के मृगीन पन्नगीन के ॥२५॥

जैसे खरे कुन्द से सगे से रसबुन्द के पगे से रतिवृन्दके जगे से कुंनतार के । मालती मुकुर मोतिया के माल मुरि जात दुरिजात चौका पै चमेली सुकुमार के ॥ दन्तपंक्ति प्यारी की विसाल कवि हर्दयाल उपमा रसाल न मराल भषुहार के । साचे सो अनार के अनार मानो मारके सराहे कौन चार के रसाल बिज्जपार के २६

तमतम तामस रसादिपति तोयद सी नीलकनटन पै सुनट प्रजुटी सी है । जनपति कन्दरप दीपतिछुटा सी छांह हाटक फटिक ओप चटक मटी सी है ॥ कचकुच दुचित्त विचित्र कृतवत बक्र छूटी लट घट पटतट लपटी सी है । विरह असुभ्रपल्लती-तन प्रदोष पाप पन्नगी पिनाकी पग पूजि पलटी सी है ॥ २७ ॥

जाको जो स्वभाव सोतो टरत न सौ उपाउ तिल पत्रि ताउ जौपै निपटि अपान है । लालकी कुचालि चालि हैं छिपाय हर-याल और ब्रजबाल तो बजावती निसान है ॥ कित छित बातनं में हित बकनाय धम्र राखत सयान जौ न भाषत निदान है । मौलिसिरी माधवी औ मालती मधूकन पै ठोकत फिरत सो मधूक रसमान है ॥ २८ ॥

सवैया ।

कंज से सम्पुट सोहैं खड़े गड़ि जात हिये जनु कुन्त की कोर हैं ।
मेरु हैं पै हरि हाथ में आवत चक्रवर्ती पै बड़ेई कठोर हैं ॥

भावती तेरे उरोजन मैं गुन दास लखे कछु औरही ओर हैं ।
शम्भु हैं पै उपजावैं मनोज सु बृत्त हैं पै परचित्त के चोर हैं २९

कवित्त ।

लागी डीठि लगन लजान लागी लोगन को लंक लागी लचन लोभान लागे पजनेख । चम्पक प्रसून दुति कंज कलिका से गात और औरै रङ्गन सु अङ्गन परत देख ॥ कसमसे कसे उर उकसे उरोजन पै उपटत कंचुकी की तुरुप तिरीछी तेख । उदया सु अस्ताचल दूनो कोर दाबि मानो दीपति नवीन पथ रविरथ चक्र-रेख ॥ ३० ॥

ठाढ़ी खण्ड तीसरे रँगीली रङ्गावटी में ताकी छबि ताकि छकि रह्यो नँदनन्द है । कालिदास बीचिन मैं सोभा की दरीचीन मैं इन्दु की मरीचीन मैं झलक अमन्द है ॥ लोग लखि भरमैं कहा धौं यहि घर मैं सुजगमगे रगमगे जोतिन की कन्द है । लालन की माल है कि मालन की जाल है कि चामीकर चपला कि रवि है कि चन्द है ॥ ३१ ॥

कैधौं सिमुताई के सम्याने ताने सुन्दर ये कैधौं सुघराई पट कूट कि है लाज की । कोकसाल कोक है कि कानन के गुम्मज कि बलिभद्र कोमल कुलह काम बाज की ॥ मोहनी की जाल कि उचाल इमि कुम्भन की ढारी है अँबारी कै जबन गजराज की । गोरे गोरे गोल कुच तेरे नील किंचुकी कि पहिरे सनाह रतिरन के समाज की ॥ ३२ ॥

जावक सुरङ्ग मे न ईङ्गुर के रङ्ग मे न इन्दुबधू अङ्ग मे न रङ्ग अौनि बाल मैं। बिम्बफल बिद्रुम बिलोके बहुभांतिन के बिलै जात एसी छबि बन्धुज बिमाल मैं॥ कहै कबिगङ्ग लाखि ललना अधर लाली लाल बारि डारौं लाख भांति रङ्ग लाल मैं। किंसुक रसाल मे न कुसुम की माल मे न गुंजन गुलाल मे न गुललाला लाल मैं॥ ३२॥

मखमलतलपग पलपल सोम बढ़ै केदली से खम्भ जंघ अमल सुहावतो। केहरि के लंकहि कलक कटि देनहार छबि भौंर निन्दक मन्दाकनाफ भावतो॥ त्रिबलीरु कचकुच ग्रीव चिबुका अधर रद नासा नैन मोचि उपमा न पावतो। नीलपट मध्य यों मुखारबिन्द आनमान इन्दु ज्यों सघन घन टारि छबि पावतो॥ ३४॥

ग्रीषम दुपहरी मे प्यारी परजंक पर सोवत निसंक छबि छाई स्वेदकन की। कंचुकी अरुण छूटी अलकै कपोलन पै सोहैं उर माल पै मराल के भखन की॥ गहे भुज बाम के उठाय मुख चूमि लियो जागि परी औचक अनूप यों लखन की। लूटत लोनाई बड़भागन सो पाई छबि देख बनि आई अरुनाई या चखन की ३५

सवैया।

एक समै मनमोहनजू सजि बीन बजावत बैन रसालहिं।
चित्त गयो चलि मोहन को बृखभानसुता उर मोति के मालहिं॥
सो छबि ब्रह्मा लपेटत यों कर लैकर सोकर कंज सी नालहिं।
ईश के सीस कुसुंभ के पुञ्ज मनो पहिरावत ब्यालिनी ब्यालहिं ३६
गङ्ग नहीं मुकता भरी माग है सेस नहीं उर बेनी बिसाल है।

भूति नहीं मलयागिरि सोभित चन्द नहीं यह उद्दित भाल है ॥
ली० नहीं मकतूल को पुञ्ज है ध्यान नहीं बिन लाल बेहाल है।
काम महीप सँभारि के बैधिये शम्भु नहीं यह कोमल बाल है ३७
सीसी गुलाबके नाबत सीस लगावत चन्दन घोरि कै गातन।
तापर बैठी अटा पर जाइ के चांदनी फैलि रही हिमि रातन ॥
डालत हैं काममीरी समीर उसीर के नीर के चौर है गातन।
बर्फ कै बुन्द परै तन पै पै तऊ बिरहानल आगि बुझात न ३८

कवित्त।

मीन मे बिकूलता कठोर हैं सुकच्छप मे हिये घाव करै को बराह से उदार हैं। बिरह बिदारिबे को प्रबल नृसिंह जू से बावन मे छली दोऊ तनमन हार हैं ॥ द्विज से अजीत अरु बीर रघुबीर ऐसे कृष्ण से दयाल सुखदेव या बिचार हैं। मौनता ते बौध काम-भरे ते कलंकी कहे प्यारीके पयोधर कै दसौ अवतार हैं ३९

सवैया।

रूप अनूप बनी सखियां जु सुता बृखभान की पान सी भूपर।
पूरण भाग महा अनुराग से वारौं कहा इन मोहनी जू पर ॥
रीझि रँग्यो अचरा कुसुमी सुभ बोलत बात लगे कुच दूपर।
लाल ध्वजा मकरध्वज की फहरात मनो गजकुम्भन ऊपर ४०
पौढ़ी हुती पलका पर बाल खुल्यो अचरा नहिं जानत कोऊ।
ऊचे उरोज की कंचुकी ऊपर लाल लसे चरिचा ढिग सोऊ ॥
सो छबि मोहन देखि छक्यो कवि ताष कहे उपमा लखि ओऊ।
मानो मढे मुलतानी बनात सों मैन महीप के गुम्मज दोऊ ४१

कवित्त।

मोहन को मन तेरे हाथही लगोई रहे अंक उरझानी रसबेलि सरसत है। कोकनद नाल दोऊ रूपक सरोवर मे देखि दाखि सौतिन को मन तरसत है॥ मरमी सुकवि यंत्र बिधिने बनाय राखी ब्याकुल मुचत होत नेक परसत है। बांह की डुलन मांह डाले मन मुनिन के जग बस कर तेरे भुज दरसत है॥ ४१॥

कैधौं युगजंघन के थम्भन के खम्भ कैधौं ऊपर उलंघन के सिढ़ी जुग फारे हैं। कैधौं रूपरेजा बांधि नेजन से निकसि आगे जाहिर करत जीति रति के मिनारे हैं॥ भौन कवि कहैं ऐसे आसे बरदार कैधौं आसे द्वै निकासे खासे हुकुम बिचारे हैं। जुरवा जलूस तोन उरवा परत काम कुरवा करत मंजु मुरवा तिहार हैं॥ ४२॥

सुंदर बदन राधे सोभा को सदन तेरो बदन बनायो चारबदन बनाय कै। ताकी रुचि लेन को उदित भयो रैनपति राख्यो मतिमूढ निज कर बगराय कै॥ कहै कवि चिन्तामणि ताहि निसि चोर जानि दियो है सजाइ पाकसासन रिसाय कै। यातें निसि फेरयो अमरावती के आस पास मुख में कलंक मिस कारिख लगाय कै॥ ४४॥

कहां मृदु हांस कहां सुखद सुबास कहां नित को उजास कहां सबही को मोहनो। कहां मृदु बैन पुनि कहां ये लजीले नैन कहां नेह भरी सैन कहां मुरि जोहनो॥ छबि की निकाई और जोबन जुन्हाई कहां उपमा लजाई जैसे मनि कौड़ी पोहनो।

आनंद को कन्द जिन मोहे नंद नन्दन को कहां चन्द मन्द कहां तेरो मुख सोहनो ॥ ४५ ॥

भाग भरे आनन अनूप दाग सीतला के देव अनुराग झिंझिया से झमकत हैं । नजरि निगोड़िन को गड़ि गड़ि गड़े पर आड़े करि पै न डीठि लोभ लपकत हैं ॥ जोबन कि मान मुख खेत रूप बीज बोयो बीज भरे बूंदन अमन्द दमकत हैं । बदन के बेझे पे मदन कामनैनी के चुटारे सर चोटन चटा से चमकत हैं ॥ ४६ ॥

बदन सुराही में छबीली छबि छाक्यो मद अमर पियाले छिन छिन में गहत हैं । अलसाय पौढ़त कपोल परजंक पर कबहूं गजक जानि चखन चहत हैं ॥ प्रेमरंग साथी ये तो सदा रहै अंक भरे छक्योई रहत कोऊ कछू न कहत हैं । झूकि परै बात के कहे त अनखात न्यारो बेसरि को मोती मतवारोई रहत हैं ॥ ४७ ॥

छाड्यो चल सागर बिधायो तन आप आय अधर के बीच रह्यो औरन चहत है । बिधि के बनाउ बस आनि परो बेसरि में बन्यो है संयोग मणि कंचन सहत हैं ॥ पूरन प्रताप चन्द पायो है मुखारबिन्द येतो कहा लहै कन्त जेतो तू लहत हैं । प्यारी के बदन पै मदन जू को मद पिये मोती मतवारो सदा झूमत रहत हैं ॥ ४८ ॥

रतिहू की मति पतिहू की ललचात अति मैनहू के नैन देख लालच भरति हैं । सुन्दर सरस सुभ सौरभ सहज सोहै

करकस मानि करी कर निदरति है ॥ सोभित सुभग कोऊ चोष धन कर तेरे जघन जुगुल मनि कराठ जो हरत है । भाय की उतारी कैधौं सोभा सांच ढारी छबि कनक के कदली की बदली धरति है ॥ ५० ॥

कोमलता कंज सों गुलाब सों सुगन्ध लै कै इन्दु सो प्रकाश लीन्हों उदित उजेरो है । रूप रति-आनन सुचातुरी सुजानन सों नीर लै निवानन सों कौतुक निवारो है ॥ कहै कवि ठाकुर मसाला बिधि कारीगर रचना निहारि को न होत चित चेरो है । कंजन को रङ्ग लै सवाद लै सुधा को बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है ॥ ५१ ॥

सवैया ।

खंजन के दृग के मद गंजन अंजन राजसि ये सरसी ।
आनन की छबि आनन में चतुरानन कानन में जु बसी ॥
जोग करै तिय की उपमा अब को महिमा बरनै बकसी ।
सिन्धु मथ्यो तब चन्द कढ्यो जब चन्द मथ्यो तब तू निकसी॥५२॥

एक समै बलिराधिका कृष्णजू केलि किये जल में सुख पाये ।
चीर में अङ्ग रह्यो लपटाय बड़ी उपमा छबि देत दिखाये ॥
हरी दरियायी की कंचुकी में कुच की उपमा कबि देत बताये।
बाज के त्रास मनो चकवा जलजात के पात में गात छिपाये॥५३॥

कबित्त ।

शील की छमा है अनिमा है द्विज दीनन की सुजस जमा

हैं के उमा है देन बर की । रच्छक सदा है बज्र बिक्रम अदा है भीम गदा की ददा है सिच्छदा है कवि कर की ॥ समर उजा है दुख दोष बिरजा है सदा पूजी जे कुजा है अनुजा है हिमिकर की । धरम धुजा है देन शत्रुन सजा है पुनि पालन प्रजा है द्वै भुजा है रघुबर की ॥ ५४ ॥

मैन चैन भंजन कुरङ्ग मद-गंजन परस औँर संजन सलोनई लगत हैं । पानिप के पंजन छबीली छबि छुंजन जलज मल मंजन ते उपमा पगतु हैं ॥ मीन सुत बंजन कपोत कीर कंजन कुमारी वृषभान जू की आनन जगतु हैं । वारौं कोटि खंजन मुरारि मन रंजन ये तेरे दृग अंजन निरंजन ठगतु हैं ॥ ५५ ॥

सवैया ।

गुनगाहक सों बिनती इतनी हकनाहक नाहिं ठगावनो है ।
यह प्रेम बजार की चांदनी चौक में नैन दलाल अँकावनो है ॥
गुन ठाकुर ज्योति जवाहिर है परबीनन सो परखावनो है ।
अब देख बिचारि सँभारि कै माल जमा पर दाम लगावनो है॥५६॥

कवित्त ।

ऐसी छबि कंज में न देखी खंज-गंज में चकोर मोर मंज में न मीन की उमङ्ग में । कर्दकील कैरव कटाच्छऊ निखेद कर बेधि करि बानन से कानन के सङ्ग में ॥ सती बाधि सौतिन के साल के करनहार हरख्याल बाल के बिसाल दृग रङ्ग में । माते ऐसे अङ्ग में मनो मतङ्ग जङ्ग में न चंचलाई मृग में कुरङ्ग में तुरङ्ग में ॥ ५७ ॥

गहिबो अकास पुनि लहिबो अथाह थाह अति बिकराल ब्याल काल को खेलाइबो। सेर समसेर धार सहिबो प्रबाह बान गज मृगराज द्वै हथेरिन लराइबो॥ गिरि सो गिरन ज्वाल माल में जरन होइ काशी में करौंट देह हिमि में गलाइबो। पबिो बिष बिषम कबूल कबि नागर पै कठिन कराल एक नेह को निबाहिबो॥ ५८॥

सेवती नेवार सेत हीरन के हार जूही जूथ औ अनार मोती बिद्रुम लसन्त मो। पन्ना पोखराज पत्र चम्पक समाज फाव माणिक गुलाब नील इन्दिबर गन्त मो॥ माधवी नमूनो गऊ-मेदकल सूनो दूनो औध बाटिका बजार पूनो बिलसन्त मो। जतन जलूम जोरि रतन रसाल रङ्ग अतन अनन्द हेतु जौहरी बसन्त मो॥ ५९॥

सौरभ सुपास सोधि सोहत सिलीमुख है साहसी समीर साफ सोखी सो सबै जगे। कोकिला कलाप कम्प कौतुक कहै को कुन कमनीय केलि कला कलित ठगे लगे॥ फूलन की फाब चारु चांदनी हिताब औध्रु आनँद की आब नौल नेह उमगे लगे। पायक पपीहा पै जगावत प्रवीन पंचनायक प्रताप ऋतु नायक रगै लगे॥ ६०॥

आयो ऋतुराज परो मृगन समाज माज आवरे बियोगी पात पूरब को जाफ मो। पुहुप पराग पौन पल्लव पपीहा पिक पीतम पिछानि प्रीति अवध इनाफ मो॥ मुकुलित मालती मलिन्द मुखरित मञ्जु मैन मलकीयति मुलुक मानो माफ मो। साफ मो

सनेह खौफखद को खिलाफ भो मुनाफ मों मजा को जोहि जगत जुराफ भो ॥ ६१ ॥

मानिनी मवास औध माफिक मवास मानि मान मजबूत ह्वै मुखालिफ मलीक भो । मारयो मनजात मारु मरजी मुफस्सिल भे मुदित मुहीम मल्ल मधु को अनीक भो ॥ मारुत मुसाहब मलिन्द मुखतार मंत्री मारू राग नौबति नकीब पिकपीक भो । फीक भो फसाद फूलहीक भो हकीक हियो नीक भो नजीक नेह रहम रफीक भो ॥ ६२ ॥

केतकी कतार चारु चम्प कचनार आंम अगर अनार डौर डार मार को जनै । पाटल पलास आम पास बास भास खास अवनि अकास प्रेम पास हास सो सनै ॥ चातकी सुचाह गन्ध-वाह को प्रवाह वाह राह रस को सुबाह कोकिला लिये मनै । औध उपराज सुख साज सो दराज दिल आजु ऋतुराज को समाज देखतै बनै ॥ ६३ ॥

आवन में अगर अनारन औ वारन में औ बल असोक औषधीन आवंयले को । अम्बर अटान आदि अलिन अवाज अङ्ग अटकी अवास अम्बु अम्बुज अकेले को ॥ आली अङ्ग अंसुक अभूषन अपीच औध आनंद अतीव गने अब को अलेले को । आस आठहूं अकास अवनि असेष अङ्ग आछो औध अमल बसन्त अलबेले को ॥ ६४ ॥

सन्त के असन्त के अनन्त मन्त मन्त के सुगति कन्त तन्त के बिलोकि बाग बन्त के । बन्त केहू बीरन समीरही रहै न देत

धीर सीर बीर लखे सौरभ दिगन्त के ॥ गन्त के महान बौघ कान्ह की लहा न असहान मानवान मधुपान कुसुमन्त के। सन्त के कहन्त पिक बिरही दहन्त करौं कैसे बिना कन्त अन्त बासर बसन्त के ॥ ६५ ॥

पपीहा को कवित्त।

चातक चमार चीरो चौंकि चौंकि देत चूखे चूकत न चोट चाण्डारन को भूखी है। बावरी बनावत बयारि बरिजाय या बिसासिनि बियोगीनी के दोष बिना दूखी है ॥ आये अब लौं न आली अवध अनन्ददान ऋतुराज रोपी है रमूज रीति रूखी है। काढ़त करेजो काटि कुहूकी कटारी कोपि कैलिया कसाइन कलंक ही की भूखी है ॥ ६६ ॥

कमल सो रङ्ग औ मुलायमता लीन्हीं सब चंचलता मीन खंज मृग श्यामताई है। मैनबान कुन्तन कटाक्ष की कटाई लीन्हीं मोदकता मत्त दन्ति कविता बताई है ॥ वर्साकर्ण मोहन सो दोनो ये बिचारि लीन्ही गारू द्वैज चन्द्रमा सी भ्रू की बकताई है। यहि बिधि बिधि बिधि सकल सकेलि साज प्यारी नैन राखि लीन्ही सर्वोपरिताई है ॥ ६७ ॥

ऐसी नहिं मृगन न खंज मीन ऐसी लखी पेखी नहिं कुन्त नोक जहर सुढारती। नहिं ऐसी पन्नगी न गीमुरी रु आसुरी न किन्नरी नरीन बीच सोसिनाज तारती ॥ हीरा की कनी हू ऐसी चूभै नाहिं चित्त बीच देइ जाकी उपमा सो हारी हेरि भारती।

ऐसी बान मैन की न गांसी ग्रांसी करे तन जैसी री कटाच्छ प्यारी तेरी करि डारती ॥ ६८ ॥

सवैया ।

नारँगी अच्छ औ श्रीफल स्वच्छ मनोज की गुञ्जन की छबि हारे।
कुम्भबधू बर के हैं किधौं २ कल्प रतीपति पद्मिनी हारे ॥
उन्नत हैं गिरि सो गिरि ईश किधौं मनमोहनि गोल बिहारे ।
कुन्दन कंजन रीति कि दुन्दुभि कै ये उरोज हैं प्यारी तिहारे॥६९॥

कवित्त ।

कहि गये आवन न आये मनभावन सु सावन तुलानो अति देखि अकुलाती मैं । साल दै दै सालत सलाका जिमि सुधि आये जेती कही बातैं निसि सरद सोहाती मैं ॥ येते पै जु मनुहारि कीन्हों है किसोर आली योग को सँदेसो ऊधो ल्यायो लिखि पाती मैं । कर लेत काँप्यो कर लोचन उमड़ि चले जेते अङ्क देखे तेते छेद परे छाती मैं ॥ ७० ॥

कियो है करार सो बिसारि दियो दगादार नन्द के कुमार सङ्ग की सँयोगिनी बनै । कौन मुख लैकै तोहिं ऊधव पठायो इहां कैसे कही बात हाय कहां लौं गिनी बनै ॥ ग्वाल कवि याते एक बात तू हमारी सुनु जोपै यह ह्वैहै तौ न फेरि योगिनी बनै । कूबरी को कूबर कतरि लाइ दीजो हमैं ताकी करैं टोपी तब गोपी योगिनी बनै ॥ ७१ ॥

रामलला नहछू बिराग सन्दीपनिहू बरवै बनाय बिरमाई

मति साँई की । पारवती जानकी के मंगल ललित गाय राम रम्य श्रज्ञा रची काम धेनु नाँई की ॥ दोहा श्रौ कवित्त गीत बद्ध कृष्ण कथा कही रामायन बिनै मांह बात सब ठाँई की । जग में सुहानी जगदीशहूं के मन मानी सन्त-सुखदानी बानी तुलसी गोसाँई की ॥ ७२ ॥

अधर मधुर लाल लाल अरविन्द भाल लाल सिर पाग पेंच खेंचि मन लसिगो । मेहँदी करन लाल जावक रसाल पद कंज मंजु लाल लखि भली भांति गसिगो ॥ लोक लाज कुल काज साज औ समाज सब लाल मुखचन्द हेरि अनायास नसि गो । युगुल अनन्य और सूझि न परत कछू ललित ललाई लाल लोचनानि बसिगो ॥ ७३ ॥

सवैया ।

फागुन मांह भरो उत्साह सु चाह हजारन होत हमेसे ।
गावती गीत सुप्रीति पगी ललना-गन डारती रंग रँगे से ॥
लाड़िली लाल गुलाल अबीर लिये पिचका कर कंज सुदेसे ।
युग्म अनन्य उमंग संताप भिजाय के भीजि रहे बर बेसे ॥७४॥

कवित्त ।

क्रीट कमनीय पंच खंड खंड कर द्युति दाम को दबाय देत लेत मन मोल है । हीरन जड़ित महामणिन खचित चारु रचित मनोज चोज सहित अतोल है ॥ बानक बिलोकि सुधि बुधि गति रोकि जात झलक लखत चहूंओर चित लोल है । युगल

अनन्य जाके उर न बसत छबि सोई सठ जनम जनम डमा-
डोल है ॥ ७८ ॥

बीरा पचरंग सीस ईसता सहित चारु चमक चलांक चन्द
चांदनी चमन है। हीरा नवबरन बिचित्र मित्र मान मद समन
सोहायो आन भांति छन छन है ॥ धीरा न रहत कहूं नेकहूं
निहारि नैन चैन न परत चितवत चितवन है। युगल अनन्य
पट पीरा मुख बीरा कर सोहे धनु तीरा हेरो जानकीरमन है ॥

सवैया।

आज सिया रघुवीर सखीह समाज सकेत बसन्त सजावत।
रङ्ग उमङ्ग अनन्त बिधान बितान लतान मनोज लजावत ॥
गावती गीत पुनीत अलीगन बीन मृदङ्ग रबाब बजावत।
युग्म अनन्य अजूब उछाह बिलोकतही मध्य मान मजावत।७७।

कवित्त।

चिबुक अधर मृदु मधुर कपोल गोल लोल कल कुण्डल
सनेह सह हेरिये। मन्द मुसकान रसखान नेह निसि नैन अंजन
समेर अवलोकि छबि छेरिये ॥ बार बार उर उमगाय नखसिख
ध्यान सरस सजाय योग ज्ञान गुन गेरिये। युगल अनन्य
सावधान सीय पीय जोहि मोहि एकरस तिलहू न मुख फेरिये ॥

बाड़व ज्यों अम्भ पर इन्द्र जैसे जम्भ पर रावन के दम्भ
पर रघुकुल राज है। पौन बारिवाह पर शम्भु रतिनाह पर ज्यों
सहसबाहु पर राम द्विजराज है ॥ दावा द्रुमझुण्ड पर चीता

मृगझुण्ड पर भूषन भुसुण्ड पर जैसे मृगराज है। तेज तिमिरंस पर कान्ह जिमि कंस पर त्यों मलेच्छ बंस पर शेर शिवराज है॥

घोड़न गोंदाय सब धरती छोड़ाय लीन्ही देश ते निकारि धर्म द्वारा दै भिखारी से। साहू के सपूत समबन्धी शिवराज वीर केते बादशाह फिरें बन बन बनचारी से॥ भूषन बखानै केते दीन्हे बन्दिखाने केते केते गहि राखे सेख सैयद बनारी से। महतौं से मुगल महाजन से शाहजादे डाँड लीन्हों पकरि तैं पठान पटवारी से॥

कत्ता की कराकरी चकत्ता को कटक कूटो सो तो शिवराज कीन्ही अकथ कहानियां। भूषन भनत तेरे धौंसा की धुकार सुनि दिल्ली औ बिलाइति लौं सकल बिललानियां॥ आगरे अगारन लौं फांदती पगारन सँभारती न बारन मुखन कुम्हिलानियां। कीबी कहै यों करौ गरीबी कहै भागि चलौ बीबी बिना सूथन सु नीबी गहै रानियां॥ ८१॥

सेवा भूमिपाल बीर कत्ता के सकत तोहिं रूम के चकत्ता को संका सरसात है। काश्मीर काबुल कलिङ्ग कलकत्ता सबै कुल्ल करनाटक की हिम्मति हेरातु है॥ बलख बिहार बङ्ग व्याकुल बलोच बीर बारहों विलायत बिलात बिललात है। तेरी धाक धूंधुर धरा में धँसि धाम धाम अंधाधुन्ध आंधी सी धधात दिन रात है॥ ८२॥

गरुड़ को दावा सदा नाग के समूहन पै दावा गज-यूत्थन पै सिंह सिरताज को। दावा पुरहूत को पहारन के कुलपर दावा ज्यों पच्छिन के गन पर बाज को॥ भूषन अखण्ड नवखण्ड

DBA00001012 4HIN

महिमण्डल में तिमिर पर दावा रवि-किरनि समाज को। उत्तर दखिन देश पूरब औ पश्चिम लौं जहां बादशाही तहां दावा शिवराज को॥ ८३॥

आगमन सुनत सुजान प्राण प्रीतम को आनि सजे सखिअन सुन्दरी के आस पास॥ कहै पदमाकर त्यों पन्नन के हौज हरे ललित लबालब भरे हैं जलबास बास॥ गूंधि गूंधि गेंदे गज गौहरन गंजगुल गजक गुलाबी गुल गजरे गुलाब पास। खासे खसखीनन के खानि खानि खाने खुले खूबी के खजाने खस-खाने खूब खास खास॥ ८४॥

चन्द की कला सी कैसी भानु की प्रभा सी जैसी भानु की प्रभा सी कैसी दीपसिखा ज्वाल है। दीपसिखा जाल कैसी कुन्दन लता सी जैसी कुन्दनलता सी कैसी छबि छटा हाल है॥ छबिछटा हाल कैसी पोखरान लरी जैसी पोखराज लरी कैसी हेम कंज-नाल है। हेम कंज नाल कैसी सोनजुही माल जैसी सोनजुही माल कैसी जैसी वह बाल है॥ ८५॥

खासी खासी कोठरिन में राउरी सौं सेजन सों आसपास अगर कपूर बगरे रहैं। दरन में परदे गलीचन सो सामा भूमि-सामा सुबरन के जड़ाऊ सो जड़े रहैं॥ ऐसे ठौर कन्तन सों युवती हेमन्तही में पौढ़े पलका पै दोऊ आनन्द भरे रहैं। सीतल सपट्टे मांह कपटे समूह सुख लपटे दुसालन में चपटे परे रहैं॥

कब दिन राति होत सांझ परभात यहै जानत न बात कोऊ रंग के रसाला में। कहै पदमाकर सुराफा से सुरेई रहैं नागत

न जागे सब जोतिहू की जाला मैं ॥ ऊरुन से ऊरु मुख मुख से लगाये उर उर सों लगाये जागे पागे प्रेम पाला मैं ॥ पूस को न पाला गनैं दूखन दुसाला होत ह्वै रहे रसाला दोऊ एकै चित्रसाला मैं ॥ ८७ ॥

अगर को धूप मृगमद को सुगन्धबर बसन बिसाल मोती अङ्ग ढाकियतु है। कहै पदमाकर पै पौन को न गौन तहां ऐसे भौन उमगि उमंगि छाकियतु है ॥ भोग के सँयोग योग सुरत हेमन्तही में एते और सुखद सुहाये बाकियतु है। तान की तरङ्ग तरुनापन तरनि तेज तूल तेल तरुनी तमोल ताकियतु है ॥८८॥

ग्रीषम के ताप तें अताप तन तायो रहै बरषा में मेघमाला अवली निहारी मैं। सरद सुखाई हेम हाहा कै बिताई तापै सिसिर सताई मन्द मारुत की मारी मैं ॥ रामनाथ होरी में किसोरी तब ऐसे कहै ऊधो यह बात कहि दीजो सभा सारी मैं। आयो है बसन्त प्राण तन तें उफनान लागे अब ना बचैंगी श्याम तेरी बेकरारी मैं ॥ ८९ ॥

महराज भये गरुआई भई रसहू विष घोरि कै पीजतु है। तुम वेद पुरान सुनौ समुझौ सुख दै कै नहीं दुख दीजतु है ॥ कहि ठाकुर मोते बनी न बनी न बनी को बनी करि लीजतु है। हरि जैसी करी अपने ब्रज को अपनो करि ऐसो न कीजतु है ॥

जाके लगै सोई जानै व्यथा पर-पीरन को उपहास करै ना। सागर जो चित मों चुभि जाय तो कोटि उपाय करो तो टरै ना॥

नेक सी किंकिरी जाके परे अतिपीरन कस हूं धीर धरै ना ।
कैसे परै कल एरी भटू जब आँखि में आँखि परे निकरै ना ॥ ९१ ॥

तिन्है नाहिं सराहत कोऊ अहे जहँ यांचक ताही पतीजिये जू । हठ नाही की नाहीं भली है भटू तजि नाहीं बिनै सुनि लीजिये जू ॥ कवि शङ्कर जो रस नाहीं हिये रसनाहीं को तो रस दीजिये जू । यहि नाहीं में नाहीं कछू रस है मन में बसि नाहीं न कीजिये जू ॥ ९२ ॥

गही जब बाहीं तब करी तुम नाहीं पांव धरी पुलकाही नाहीं नाहीं सो सोहाई हो । चुम्बन में नाही औ अलिङ्गन में नाहीं परिरम्भन मे नाहीं नाही नाहीं अवगाही हो॥ ठाकुर कहत जब डारी गलबाहीं तब करी तुम नाही आछी चतुर सोहाई हो । करो नाही नाहीं जैसे डोलै परछाहीं जहं हां ते नीकी नाही सो कहां ते सीखि आई हो ॥ ९३ ॥

सवैया ।

आजु कहां अरसात जम्हात देखात कछू अब यों अलबेले ।
लाल महावर भाल लसै अधरान पै अंजन को रँग मेले ॥
त्यों परताप कहा कहिये पिय छोड़ि कहा इत आइ अकेले ।
मोहन जाउ तहां ही जहां जिन के सतसङ्गन में निसि खेले ९४
गुरुलोगन की तजि लाज सबै हम प्रीति करी तुम सों बजि कै ।
बिसराइ दई तुम तौन लला निबहीं नहि सो तनिको लजि कै ॥
बदनाम भई अब रीति नई कहुँ रैन बसो अनतै भजि कै ।
दिखरावन को यह रूप नयो इत प्रातहि आवत हो सजि कै ॥

कवित्त।

गरद गुलाल मुख मण्डित ललित दृग कज्जल कलित मुकुलित प्राणप्यारी के। ईश कवि सोहैं अंग बसन सुरंग रंग संग बालबृन्द वृषभानु की कुमारी के ॥ कहत अभीर हौं अभीर बलबीर जू से पार रंग धार तट कंचुकी किनारी के। कंचन के जालेदार बाले कर टार यार चूमि लै कपोल गोल २ मदवारी के ॥ ९६ ॥

अंजन दै नैन बान नागर समारे कर भृकुटी कमान खौर पनच चढ़े लीनै। ईश कवि सोरह सिँगार तुंग पैदर के द्वादश हू भूषण सवांरि चित्त दै लीनै ॥ कंचुकी पताका सारी नील को निशान करि दीने दाह नूपुर नगारे अलबेली नै। पीतम के सङ्ग रति जङ्ग जीतिवे के काज येते दल साजे आज अबला अकेली नै ॥ ९७ ॥

सङ्ग नन्दलाल के बिसाल रस रास कीन्हें होती थीं निहाल सो तो अलख लखावैंगी। गरे भुज माल उर उर सों रसाल लायो तामें गनपाल. कैसे सेल्ही लटकावैंगी ॥ नाम रूपलाल गुन गनै कुलजाल तजि जीहैं तौन कौन सोहस्मि रट लावैं-गी। ऊधो जू कृपाल भला है करि दयाल भाखौ जियत खसम कैसे भसम रमावैंगी ॥ ९८ ॥

सवैया।

दीनदयाल कृपाल हमैं शरणागत राखिये नित्त चहौं।
मोहिं किंकर आपन जानि सदा गिरजापति लाज सम्हारि रहौं ॥

गानिये नहिं दोष कृपा करिये केहि के ढिग जाय कलेस कहौं।
आधीन कहै तुमते को बड़ो जेहि के दरबार में जाय रहौं ९९॥

कुण्डलिया ।

दीनबन्धु करुणायतन कृपानन्द सुखरासि ।
त्राहि २ राखिय शरण काटि सकल जग फांसि ॥
काटि सकल जगफांसि मोह क्रोधादि वृन्द जे ।
राखिय शरण उदार नाथ अब बिलम न कीजे ॥
दीजे भक्ति रसाल आपको सुयश हो बन्दी ।
नासि सकल दुखरासि शम्भु को बाहन नन्दी ॥ १०० ॥

मनहरण ।

औदरहरन अशरण के शरण हार आरतिहरण चरण चित लाइये । दीनन अधार प्रभु ज्ञान गुनपार राखो सरस उदार पतितन गति-दाइये ॥ आरक चढ़ाय जलबुन्द सिर नाय द्विजराज सुख पाय पाहि याहि सिर नाइये। शंकर दयाल चन्द्र-भाल हे कृपाल दीजै भक्ति सो रसाल ताकि शरण सिधाइये ॥१॥

कूबरी की यारी को न सोच हमैं भारी ऊधो एकै अफसोस सांवरे की निठुरान को । योग जो लै आयो सो हमारे सिर आंखन पै राखन को ठौर तन तनको न आन को ॥ अङ्ग अङ्ग व्रती हैं वियोग ब्रजचन्द जू के औव हिए ध्यान वा रसीली मुसकान को । आंखै असुआन को करेजन मैं मान को जुबान गुनगान को औ कान बंसीतान को ॥ २ ॥

सवैया ।

निसि बासर श्याम स्वरूप लखैं पल लागत चित्त अचेत गहैं ।
प्रतिबाद करैं तो वही गुन को बिमुखान ते नाहीं मिलाप चहैं ॥
गनपाल रसज्ञ जो ता रस को सखि ताही सों नेक प्रमोद लहैं ।
सत नेह की बात सतानन में असतान के जी में परे सो कहैं ॥३॥

कबहूं मुख की छबि पै अरुझै सुरझै मल बेग बहावो करैं ।
तन पानिप पै छन देत मनै कुल लाज सुबुद्धि भुलावो करैं ॥
गनपाल सदा निज स्वारथ सों चित प्रेम नदी उमगावो करैं ।
सजनी तन भूप अनूप बने दृग देखत रूप बिकावो करैं ॥ ४ ॥

लखि कोमल मंजु सरोज प्रभा मुख सेति सदा तरसोई करैं ।
तन पानिप चन्द छटा दरसे सुखसिन्धु हिये सरसोई करैं ॥
गनपाल सखी बिरहागिनि सो जगजाल सबै झरसोई करैं ।
मन चेत को देत सहेत तऊ दृग आनन्द पै बरसोई करैं ॥ ५ ॥

चारि हूं ओर ते पौन झकोर झकोरनि घोर घटा घहरानी ।
ऐसे समै पैदमाकर कान्ह की आवत पीत-पटी फहरानी ॥
गुञ्ज की माल गोपाल गरे ब्रजबाल बिलोकि थकी थहरानी ।
नीरज ते कढ़ि नीर-नदी छबि छीजत छीरज पै छहरानी ॥६॥

दन्त की पङ्गति कुन्दकली अधराधर पल्लव खोलन की ।
चपला चमकैं घन बिज्जु लसै छबि मोतिन माल अमोलन की ॥
घुंघुरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल दीपति लाल कपोलन की ।
नवछाउरि प्राण करैं तुलसी बलि जाउं लला इन बोलन की ॥

कवित्त ।

दौरि दौरि घोरि घोरि कोरि कोरि मेघ यों दिसा दिसानि सासि कै निसासि कै दिनेस के । बलाक दन्त झेलते मनोपहार पेलते सो ओघ ज्यों पठेवटे गनेस के अदेस के ॥ घूमि घूमि झूमि झूमि चूमि चूमि भूमि को जुटै छुटै हुटै वुटै मुटै लुटै रसेस के । भरे नदी सकुण्ड से झरैं फुहार सुंड से अरण्य झुंड झुड से बितुण्ड से सुरेस के ॥ ८ ॥

सोनहरे सेहुंदार तेलिआ लबौरी लाल सबुजा सुरङ्ग किमिमिसी सुर खेले के । सन्दली सँजाफी सिरगा समुन्द अबलखी बीर तागरा दराज मोल औ महेले के ॥ खिङ्ग चम्भा चाकगुली केहरी चीनी नुकरा मुमकी कल्यान ओघ आछे मनरेले के । पौनगति पेले नभ फेले मेघमेले कीन बेले अलबेले बाजी इन्द्र के तबेले के ॥ ९ ॥

काबली सिराजी लक्का लोटन गिरहबाज जोगिआ पटैन चपचीनी लीला लाल हैं।गोला कलपेटि आनि सावरा भुवेसराजा गमसकी ठठीर चोवा चंदन मराल हैं ॥ तामड़ा पिलङ्क दो पहरबाज घरिआ मभूरा कौड़िन सुरुख ओघ उपमाल हैं । सोहै मेघमाल ये बहाल अन्तराल सुरपाल के कपोतजाल कैधों ये बिसाल हैं ॥ १० ॥

सुरुख सहाली मूहे सन्दली सपेद स्याह सफताल सोसनी सुरङ्ग सजवाले हैं । सबुज सोनहरा सगरफरा समेत साफ सरब-

ती सोफी सुरमई से निकाले हैं ॥ आसमानी आबी आगरई औ अबीरी औ आवासी अरबवानी अव्वल अम्याले हैं। आछे औघवाले अबमाले हैं अकास कैधौं फैले आजु आले मघवान के दुसाले हैं ॥ ११ ॥

किसमिसी कोकई कपूरी कोच की है काही किसमिसी कासनी पियाजी कनपूत के। जाफरानी जीजई बदामी बरसई आध बैंजनी बनोटी ऊदे मूगिया अमूत के ॥ फाकतई फीलई गुलाबी लाखी फालसई नाफरमानी नमूनी नारंजी सबूत के। चम्पई अनाले तूसी पीले पिसतई काले पावस घनाले कै दुसाले पुरहूत के ॥ १२ ॥

बाटिका बिहङ्गन पै बारिजात रङ्गन पै बायु बेग गङ्गन पै बसुधा बगार है। बांकी बेनु तानन पै बंगले बितानन पै बेस औध पानन पै बीथिन बजार है ॥ बृन्दावन बेलिन पै बनिता नबेलिन पै ब्रजचन्द केलिन पै बंशीवट मार है। बारि के कनाकन पै बद्दलन बांकन पै बीजुरी बलाकन पै बरषा बहार है ॥

यमुना के पावन पुलिन जे सुभावन के पावन के पावन लों सारदा गुनावन को। मिचकी चलावन पै कुच की हलावन त्यों चूनरी चुनावन को कहे सुहावन को ॥ देखे बनै भावन प्रसेद मुख आवन को मोती मनो प्रेम हंस सावन लुनावन को। आई मनभावन बुलावन झुलावन पै सावन सुहावन को गावन सुनावन को ॥ १४ ॥

बैठी मंच मानिक को फेरत रई को औध माधुरी की मूरति

सी सूरति सनेह की । सावन सुहावन को गावन सखीन साथ तैसई सोहाई आई छटा घटा मेघ की ॥ ता समै बजाई कान्ह बंशी तान आई कान सुधि सी हेरानी हिये मैनवान बेह की । दूध की न दही की न माखन मही हू की न कुल की कही की न देह की न गेह की ॥ १५ ॥

सवैया ।

होय पियूख पयोनिधि ते बिधु जीति प्रकाश अकंटक छावै ।
बोलनि हाँस बिलासनि खोलनि डोलनि सोम सिंगार बतावै ॥
चौध अनन्द लखे ब्रजचन्द यों आदर सोम अनूप महा वै ।
राधिका के मुख के सुखसिन्धु की सीकर ताको सरोज न पावै ॥

अब यों मन आवत है सजनी उनसों सपनेहुँ न बोलिये री ।
अरु जो निलजे है मिलैं तो मिलैं मन से गसगुंज न खोलिये री ॥
दृग देखन की कछु सौंह नहीं उन गोहन भूलि न डोलिये री ।
घनआनंद जानि महा कपटी चित को न प्रयोजन फोलिये री ॥

कवित्त ।

ऊधो सुनो ऊधम मचायो बर्षा ने हरि बिन हर्षाने ते बखाने केती बाती है । भकती है भुजङ्ग भखावनी मयूर बोले ओलती अहू तें एक हू ते प्रान खाती है ॥ घोर घन टारैं घहरात जो मुझाति जात कैसे के गुदरती राती उदारती छाती है । करम कटा सो बिज्जुछटा की तडप देखि तरप अटा सी घटा घिसि घिसि आती है ॥ १८ ॥

मानो वारिनिधि की निमी सी सिफी आसमान शरत दिशान घन घेर घहराती है। मदन नरेश जू को चमू चढ़ि तुङ्ग तुङ्ग तुरंगें धरि छत्रिन की छटा छहराती है ॥ मोहन भनत नील गिरि की गिरा सो चारु बनी हेम पच्छ स्वच्छ महत् कहराती है। मातीं हैं मतङ्गन ते उमड़ि उमड़ाती आज तरप अटा सों घटा घिसि घिसि जाती है ॥ १९ ॥

पिय पैये तो बोध बतैये घने जेहि पैये जो औध अतीव कहां। ये कलंकिनि कोयल काढिहैं वैर बुरो बिधु जीव छपीव कहां ॥ उपमान कहाय है हाय किते मुरछाय कह्यो घरी तीन महां। अहो नाह मैं काह कहोगी तबै पुछिहैं पपिहा जबै पीव कहां ॥ २० ॥

दोहा प्रेमसागर ।

बिधि हरिहर जाको सदा जपत रहत हैं नाम ।
बसो निरन्तर मो हिये सिया सहित सो राम ॥ २१ ॥
मन चाहत सब दिन रहौं तव ढिग ये प्रिय नात ।
काह करों कछु बस नहीं परालब्ध की बात ॥ २२ ॥
तव बिछुरत छण में मरों काह जियो बिन तोहिं ।
तव मूरति उर में बसी वहै जियावत मोहिं ॥ २३ ॥
गनप गिरा गुरु गौरिपति सीतापति-पद ध्याय ।
बरणत राधाबर-चरित रसिक जनन सिर नाय ॥ २४ ॥

कवित्त ।

गनपाल हालचाल विमल बिसाल बानि राजत अमल तल

कमल पदन के। उर गुंजहार बनमाल वारापार बनी सुखमा अपार रूपसागर हरन के॥ सिखिमख मुकुट लकुट कर कञ्चन की पीतपट लपट छुटान के कदन के। नग के छदन मुसुकान में रदन सोहैं छवि के सदन मनमोहन मदन के॥ २५॥

सवैया।

हम हूं सब जानति लोक की चालहिं क्यों इतनो बतरावती हौ।
हित जामे हमारो बनै सो करो सखियाँ सबै मेरि कहावती हौ॥
हरिचन्द जू यामे न लाभ कछू हमैं बातन क्यों बहरावती हौ।
सजनी मन पास नहीं हमरे तुम कौन कों का समझावती हौ॥
अबहीं मिलिबो अबही मिलिबो यह धीरज हूं में धिरैबो करै।
उर तें बढ़ि आवै गरे ते फिरै मन को मन माहिं घिरैबो करै॥
कबि बोधा न चाह हितू हित की नितही हिरवा सी हिरैबो करै।
कहते न बनै सहतेही बनै मनही मन पीर पिरैबो करै॥२७॥
तुम आपनी ओर चहै सो करौ हम आपनो नेह न छोडि हैं जू।
तुम बोलो चहै अनबोलो रहौ हम प्रीति सो नैन न मोरि हैं जू॥
बिधि को जो लिखो सो मिटैगो नहीं बिरहानल में बिष घोरि हैं जू।
लिखि देत हैं कोरहि कागज पै बम और सों प्रीति न जोरि हैं जू॥
गुणगाहक सो बिनती इतनी हकनाहक नाहिं ठगावनो है।
यह प्रेम बजार की चांदनी चौक में नैन दलाल अँकावनो है॥
गुन ठाकुर ज्योति जवाहिर है परबीनन सों परखावनो है।
अब देखु बिचारि संभारि कै माल जमा पर दाम लगावनो है॥
यह मेरी दशा निसिबासर है नित तेरी मलीन को माहिबो है।

चित कीन्हो कठोर कहा इतनो अस तोहिं नहीं यह चाहिबो है ॥
कवि ठाकुर नेक नहीं दरसो कपटीन को काह सराहिबो है ।
मन भावै तिहारे सोइ करिये हमैं नेह को नातो निबाहिबो है ॥

उचके कुच के कच के भर सों लचके करिहां मतिमन्दहु मैं ।
अधरा मै मिठाई है ऐसी कछू वह तो मिसिरी मैं न कन्दहु मैं ॥
मुख की छबि सो दबिजात सरोज फिकाई सी धावत चन्दहु मैं ।
जो पै ऐस हूं राधे सो रूसत हैं तो सयान कहा नदनन्दहु मैं ॥

दोहा ।

तु क्यों न मानत मुकतई तुम बिन हमैं न चैन ।
निसिबासर देखत रहत तऊ न मानत नैन ॥ ३२ ॥

सवैया ।

सुनि नेहभरी बतियाँ हिय की मुख इन्दु सो वा मग फेरते तौ ।
मन धारि दया प्रतिपालत जानि सुधानिधि बानि सों सेरते तौ ॥
गनपाल अमी मग कुंजन धीर बिचारि दयानिधि टेरते तौ ।
कबहुं करि सूधे सरोज से नैन मया करि मो दिसि हेरते तौ ॥

रूप अनूंप दियो बिधि तोहिं तो मान किये न सयान कहावै ।
और सुनो यह रूप जवाहिर भाग बड़े बिरले कोऊ पावै ॥
ठाकुर सूम के जात न कोऊ उदार सुने सबही उठि धावै ।
दीजिये ताहिं दिखाइ दया करि जो चलि दूर ते देखन आवै ॥

दोहा ।

बचि निबाई जौ तजै तो चित अधिक डरात ।
ज्यौं निकलंक मयंक लखि गनैं लोग उतपात ॥ ३५ ॥

सवैया ।

सोहैं सहेलिन में सुकुमारि सवांरे सिंगार सुभांति भली के ।
सामुहे आरसी में लखि रूप भये उर सीतल छैल छली के ॥
आंजिवे लोचन को लछिराम जू अंजन आंगुरी बीच लली के ।
चेटुआ भोर मलिन्द को यों चपक्यो मनो कोर गुलाबकली के ॥

सांझ ही सो रँगरावटी में मधुरे सुर मोदन गाय रही है ।
सांवरे रावरे की मुसुकानि कला कहि के ललचाय रही है ॥
लालसा में लछिराम निहोरि अंब कर जोरि बुलाय रही है ।
बैजनी सारी के भीतर में पग-पैंजनी प्यारी बजाय रही है ॥

कवित्त ।

पैंजनी झमक पायजेब की जमक रङ्ग जावकौ चमक महाधीरज हिते गई । लंक को लचानि रोमराजी की रचनि चारु चोली बिरचानि सो बियोगिनि बिते गई ॥ कवि लछिराम घालि घूंघुट मदन चन्द मन्द मुसुकानि की मरोरनि हिते गई । सांकरी गली में डारि सांकरे सनेहन की सांकरे समर चोरु चखन चिते गई ॥ ३८ ॥

सवैया ।

चख चंचल चारु चुरावत चित्त कछू मुसकात औ लाजत हैं ।
उठि प्रात समै बलदेव सखी पर्य्यंक बिचित्र पै भ्राजत हैं ॥
जगजीवन राम सिया शुभ अङ्गन भूषण बेस बिराजत हैं ।
अवनीतनया तन हेरि रहे सुख सों दोउ सामुहे राजत हैं ॥

आजु लखी ब्रजराज प्रिया पर्य्यंकहिं पै सुख ज्वै रहे हैं बर ।
आनँद सो मुसकाय कछू बलदेव तमोलहिं लै रहे हैं कर ॥
सो भर मैन महीपति के भट लाज समाजहिं कै रहे हैं डर ।
चारिहू नैन कसाकसी कै भृकुटी धनु पै जनु दै रहे हैं सर ॥
कुलकानि सुबानि सुनी सिगरी उर धीरज नेक थिरात नहीं ।
मृदु मूरति सांवरी बावरी कै चालिभे कितहूँ सो सुझात नहीं ॥
गनपाल कहै तू मिलावन आनि सो मों मन में तो बिसात नहीं ।
सिख तेरी है सीतल नीर सी पै बिरहागि हिये की बुझात नहीं ॥

कवित्त ।

आजु कुंज मन्दिर अनंद भरि बैठे श्याम श्यामासङ्ग रङ्गन उमङ्ग अनुरागे हैं । घन घहरात बरसात होत जात ज्यों ज्यों त्योंहीं त्यों अधिक दोऊ प्रेम पुंज पागे हैं ॥ हरिचन्द अलकैं कपोल पै सिमिट रहीं बारि बुन्द चुवत अतिहि नीक लागे हैं । भीजि भीजि लपटि लपटि सतराइ दोऊ नीलपीत मिलि भये एकै रङ्ग बागे हैं ॥ ४२ ॥

सवैया ।

ब्रज के सब नाउ धरैं मिलि ज्यों ज्यों बढ़ायकै त्यों दोउ चाव करैं ।
हरिचन्द हँसैं जितनो सनेही तितनो दृढ़ दोऊ बिभाव करैं ॥
सुनि कै चहुंधा चरचा रिस सों परतच्छ ये प्रेम प्रभाव करैं ।
इत दोऊ निसंक मिले बिहरैं उत चौगुनो लोग लगाव करैं ॥ ४३ ॥
हौं करि हारी उपाव घनी सजनी यह प्रेम फँदो नहिं टूटै ।

बाढ़त जात व्यथा अधिकी निसिबासर को बिरहानल घूंटै ॥
मोहिं देखाव लला मुखचन्द सु प्रेमसखी इतनो यश लूटै ।
लालन देखत जौ मरिजाउं तो मैं बलिजाउं महादुख छूटै ॥४४॥
प्रेम पयोधि परेउ गहिरे अभिमान को फेनु कहा गहि रे मन ।
कोप तरङ्गनि सो बहिरे पछिताय पुकारत क्यों बहि रे मन ॥
देव जू लाज लिहाज ते कूटि रह्यो मुख मूंदि अजौं रहि रे मन ।
जोरत तोरत प्रीति तुहीं अब तेरो अनीति तुहीं सहिरे मन ॥
मोहन को मन मोहन कौ बसि ले पद पंकज मौन मझारो ।
त्यों गनपाल न चाउ हिये विष लेत सुधा हरि छ्वै करि डारो ॥
येकौ चलेगी न तेरी अली सब रहैं धरी उर माहिं हजारो ।
ठाठ परो सब योंही रहैगो चलैगो जबै कढ़ि प्रान बजारो ॥
मङ्गल के पद जानो नहीं तुम जंगलबासी बड़े खल खाली ।
रागे न रङ्ग उमङ्ग भरे सुक पाले न जू पिंजरान की जाली ॥
पाके अनार के बीजन के रस छाके नहीं यह कौन खुसाली ।
खात कहा खटआमुनि के फल कोचकी होत है चोच की लाली ॥
दृगलाल बिसाल उनींदे कछू गरबीले लजीले सु पेखहिंगे ।
कब धों सुथरी बिथुरी अलकैं झपकी पलकैं अबरेखहिंगे ॥
कवि शम्भु सुधारत भूषण बेस निहारि नयो जग लेखहिंगे ।
अँगिरात उठी रतिमन्दिर से कब मोरहिं भामिनि देखहिंगे ॥

कबित्त ।

करम करम कर पति सों मिलाप भयो आनन्द उमङ्ग इत उर न समाति है । सुक्ख महादुक्ख मोहि दीजिये न भूलि नाथ

घरी की धमक सुनि छाती अकुलाति है ॥ जनम जनम लगि मानि हौं असान तेरो कहै कवि कृष्ण प्रीति हिये न समाति है । येरे घरियार-दार टेरि कहौं बार बार मोगरी न मार मो गरी-बिनि की राति है ॥ ४९ ॥

अमित पुराण वेद शास्त्रन को बांचि बांचि सासन बुझाय करि नितही थका करैं । द्विज बलदेव कहै वेदन को भेद लखि अमृतसी बानी सुनि कुपथ ढका करैं ॥ श्रोतन सों भाखैं कछु गुप्तऊ न राखैं मन चाखैं शब्द सुन्दर सो नितही चका करैं । कहत हैं ताको कछु जाने तामे याको नित भाषा बिन जाने सन्निपाती से बका करैं ॥ ५० ॥

मोह की निसा में जात बासर त्रिजामें होत दिव्य तन छामें वैस नाहक बितावै तू । जैहै बीति जामें नेक पैहै न अरामें ये न ऐहैं तव काम वैजनाथ जिन्हैं ध्यावै तू ॥ लोभ जड़ता में देह गेह बनिता में भूलि भ्रमत धरा में हठता में काह पावै तू । चाहै शिवधामैं अष्टयामैं सुख जामैं छोड़ि झूठ धनधामैं राम-नामैं क्यों न गावै तू ॥ ५१ ॥

बाल समै रबि भक्ष कियो तब तीनिहुं लोक भयो अँधियारो । ताहि ते त्रास भयो जग में सोइ संकट काहु से जात न टारो ॥ देवन आनि करी बिनती तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो । को नहिं जानत है जग में यह संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ५२ ॥

प्रेमसखी ।

फूलछरी तरवारि चली इत ते पिचका भरि मारति तीर हैं ।
भीजि गई रँग से सिगरी बिथुरी अलकैं न सँभारत चीर हैं ॥
शस्त्र प्रहार सहैं सिगरे भट हासभरे न गनैं तन पीर हैं ।
प्रेमसखी प्रमदा मनमत्त खरी मनो घायल घूमत बीर हैं ॥५३॥

कवित्त ।

सोहैं सुचि सुभगात दामिनी सो दौरि दौरि कामिनी लपटि गई सबै सुकुमारे सों । गहि गहि ल्याईं जू प्रबल बरहाई सबै होरी होरी करत किशोरी न्यारे न्यारे सो ॥ प्रेमसखी गुलचीप सिगरे नचाय दीन्हों युवती बनाय बहु कहत बिचारे सों । अंजन अँजाय हम चूरी सारी पेन्हि आय कहियो हुजूर जाय प्रीतम हमारे सो ॥ ५४ ॥

जनकदुलारी की सहेली अलबेली एक लाड़िले लखन सों गुमान-भरी झगरी । दूसरी चतुर वेष पूरुष बनाय आय जाय रामपास ठाढ़ी भई छबि-अगरी ॥ तीसरी तुरत दौरि बेंदी भाल भरत के लगाय रिपुसूदन को ल्याई छीनि पगरी । बात कहिबे के मिस प्यारे को बदन चूमि भागि आई तारी दै हँसन लागीं सगरी ॥ ५५ ॥

सवैया ।

और सहाय भई प्रमदा सब मित्र को ल्याइ सखी यहि ओर का ।
भाग बड़े इनके कहिये तिय की छबि दीजिये राजकिशोर को ॥
आजु खवासी करो सियकी युवती तन धारि खवावो तमोर को ।

दासी सबै हम हैं हैं लला मुख ते भरतार कहौं चितचोर को ॥
जानि हैं जो इनके गुनको तिनके जग दोऊ सबै विधि बानि हैं ।
बानि है बिश्व के पोषण की तिन कों भरतार कहैं कछु हानि हैं ।
हानि है प्रेम सखी कबहूं जिन को सिय आपु सखी करि मानि हैं ॥
मानिहैं ताहिं बिरंचि सदा जिन पै सियकी सियरी दृग जानि हैं ।

रामलला झूलना ।

महबूब गली दलदली खूब पग धरतेही अरभट्ट हुआ ।
फिर कोइ उपाय नहि बन्य परै जग सेती भी खटपट्ट हुआ ॥
दिलगीर फकीर फिराक वही गलतान हाल बरबट्ट हुआ ।
रामलला उस छैल छबीले को लखते झटपट्ट हुआ ॥ ५८ ॥
पग नख सुखमा खोजत उपमा थकि रही शारदा मटकि २ ।
घनश्याम रूप अभिराम देख गयो काम वामयुत सटकि २ ॥
सुनु बीर कीर की नाईं मन फँसि जुलफ जाल में लटकि २ ।
रामलला दृग बांकेन में सखियां अंखियां रहि अटकि अटकि॥
बनं ठन्य चले सब छैल भले लखि मोहीं पुर नागरियां जी । केती मोह जाल फँसि बस्य भई मुसक्यान मोहनी केती डारियां जी ॥ केती जुल्फ पेंच बिच उरझि रहीं केती नैन सैन सों मारियां जी । रामलला लखि छक्य रहीं तन धन धाम सुधारियां जी ॥ ६० ॥
कटि पट पीत तुनीर कसे चहुँघा मुक्ताहल लागरियां ।
सर चाप मनोहर भुज बिशाल सिर कीट अधिक छबि आगरियां ॥
चख चंचल रूप अनूप लसै मुसकान मनोज उजागरियां ।

हँसि रामलला मनमोह लियो सब जनक नगरकी नागरियां ।
ढाल ढरन हरि शरण सांग करि करभ कुलह अँग रचा है ।
तरकस तीर सतो गुण सर भरि प्रेम फेट कटि खचा है ॥
ध्यान धनुष गुरुज्ञान पुरकसी नाम चौकसी बच्चा है ।
रामलला समसेर सुरति गहि सूर सिपाही सच्चा है ॥ १२ ॥
हाल बेहाल हाय हरदम में सही इश्क दी चोटै हैं ।
कारी घाव खाय दिल अन्दर दिलवर दिल पर लोटै हैं ॥
जिगर जिकर क्या करै फकीरी दिल दिलगीरी मोटै हैं ।
रामलला सिर इश्क हाथ दिया फिर क्या करना ओटै हैं ॥१३॥

पद गाने का ।

गुरूजी खूब सिखलाई रटन सियाराम रटने की ।
जुगुति मजबूत बतलाई सकल जंजाल कटने की ॥
अगम की गैल दिखलाई दसा मति गति पलटने की ।
अजूबा चाख चखलाई न है अब चाह घटने की ॥
दिलअन्दर रेख खचलाई पिया छबि है जो जटने की ॥
अबिद्या मूल बिचलाई गरूरी फौज हटने की ।
लिया इकरार लिखवाई ज्ञान मैदान डटने की ॥
कपट की टाटी खिसलाई बिरह बस्तर के फटने की ।
लगन क्या रामलला लाई गरे प्यारे लपटने की ॥१४॥
हम हैंगे इश्क दीवाने हमन को होसदारी क्या ।
रहैं आजाद इस जग से हमन दुनियां से यारी क्या १ ॥
खलक सब नाम अपने को बहुत कुछ सिर पटकते हैं ।

हमन गुरुज्ञान है आलम हमन को नामदारी क्या २ ॥
जो बिछुड़े हैंगे प्यारे से भटकते दरबदर फिरते।
हमारा यार है हम में हमन को बेकरारी क्या ३ ॥
न पल बिछुड़े पिया हमसे न हम बिछुड़े पियारे से।
जहां यह प्रीति लागी है तहां फिर इन्तज़ारी क्या ४ ॥
पिये रसप्रेम मतवाला फिकर की क्या जिकर कीजै।
जो जानत है सबन घटकी उसे ज़ाहिर पुकारी क्या ५ ॥
कबीरा इश्क मत्फुकरा गरूरी दूर कर दिल से।
य चलना राह नाजुक है हमन सिर बोझ भारी क्या ॥

राग होली।

सत संग रंग भेद ना जाना। बाजीगर की आतशबाजी देखत मन ललचाना। तन मन धन योबन मदमाती भूली ठौर ठिकाना, पिया घर ना पहिचाना १॥ लरिकाई लरिकन सँग खोई ज्वान भये अभिमाना। भव दुखरोग ग्रस्यो बिरधापन आयो यम परवाना, सजन गृह कीन्हि पयाना २॥ जन्म कर्म धिरकार सखीरी पतिहित ब्रत नहिं ठाना। नेह निबाह सुभिरि पीतम को जो न हृदय हरषाना, ताहिं जड़ जानु पखाना ३॥ साहबदीन सदा सुख सङ्गी प्रभु सुन्ना मनमाना। द्वै अक्षर सुमिरण सुभ सङ्गति मांगु यही बरदाना, दया करि दे भगवाना ४ ॥ ६६ ॥

सँभरि होली खेलिये रघुबीर। आवत है श्री जनक-नन्दिनी सङ्ग सखिन की भीर १ ॥ त्यहि अवसर तहँ आइ गये तब लखनलाल रणधीर। बोरि दई सारी चूनरिया महरानी जी की

चीर २ ॥ रामदास दे हांक कहत हैं सुनिये आरिउ बीर । आजु भाजि कै नहिं उबरोगे श्रीसरयू के तीर ३ ॥ ६७ ॥

राग बिलावल ।

प्रात समय दधि मथत यशोदा अति सुख कमल नैन गुण गावति । नील बसन तन सजल जलद मनु दामिनि दिवि भुज-दण्ड चलावति ॥ चन्द बदनि लट लटकि छबीली मनु अम्मृत रस राहु चुरावति । गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिणि धुनि सुनि श्रवण रमावति ॥ सूरस्याम अँचरा धरि ठाढ़े काम कसौटी कसि दिखरावति ॥ ६८ ॥

प्राणपति नाहीं आये बीती बहार । घुमड़ि आये घनघटा चहूंदिसि भरि गयो नदी अरु नार ॥ बिजुरि तड़पि घन गराजि बरषि जल सघन रैनि अँधियार । डरपति बिरह अकेली कामि-नि नहिं गृह राजकुमार ॥ यह तन रैन सैन को सपना निक-सत नाहीं सार । हे द्विजराम आस चरणन की राखो शरण उदार ॥ ६९ ॥

कवित्त ।

चारो युग बीच मीच मद को मलनहार नाम सुखसार तरवार धारधाक है । यामे जो मरम धुर धरम धुरीन जन जानत सुजान जौन दिब्य दिलपाक है ॥ माया मल मद मांझ बस्यो जाको चित्त तौन लखि ना सकत नाम महिमा अवाक है । युगल अनन्य जाहि रुचत न रामलाल ताहिं पर बार बार कोटिन तलाक है ॥ ७० ॥

नाम के रटन बिनु छूटत न दाग है। चाहो चारो ओर दौर देखो गौर ज्ञानहीन दीनता न छीण होय भौन अघ आय है॥ जहां तक साधन सुराधन बिलोकिये जू बाधन उपाधन सहित नट बाग है। तीरथ की आस सो तो नाहक उपास हेतु एकबार राम कहे कोटिन प्रयाग है॥ युगल अनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम नाम के रटन बिन छूटत न दाग है॥ ७१॥

और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ रामनाम चित चिन्तामनि चाहि चाहरे। और नाम रैयत दिवान औ वजीर सम राम नाम अचल अखण्ड बादशाह रे॥ और नाम शिष्य सद समता सजाय सदा राम नाम गुरू गुण अगम अथाह रे॥ युगल अनन्य और नाम दिन चार प्यार राम नाम नेहनिधि नित्य निरबाह रे॥ ७२॥

सवैया।

हाली में हाली कहे कछुहू पर प्रीति पुनीत पगे बनमाली।
माली मिसाल फिरो बर बाग सुसींचत होत सुगन्ध सुसाली॥
साली मिलाप बिना सजनी उरताप कलाप न आवत लाली।
लाली ललाम लला की भला जब चित्त चढ़े तबहीं सुख हाली॥
प्रेम बराबर ईश सही नहीं बाद बिबाद बिषाद की गैल है।
या रस स्वच्छ प्रतच्छ बिराजत मानत मूढ़ न ठानत सैल है॥
नाम निसोत सनेह समेत रटे यकतार लखे सत सैल है।
श्रीयुगल अनन्य सुजान भले पर भाव बिहीन बराबर बैल है॥
मिलि गांव के नांव धरो सबही चहुँघा लखि चौगुनो चाव करो।

सब भांति हमैं बदनाम करो कहि कोटिन कोटि कुदांव करो ॥
हरिचन्द जू जीवन को फल पाय चुकीं अब लाख उपाव करो ।
हम सोवत हैं पिय अंक निसंक चवायनै आओ चवाव करो ॥
नेह लगाय लुभाय लई पहिले ब्रज की सबही सुकुमारियां ।
बेनु बजाय बुलाय रमाय हँसाय खिलाय करी मनुहारियां ॥
सो हरिचन्द जुदा कै बसे बधि ह्वै छल सों ब्रजबाल विचारियां।
वाह जू प्रेम निबाह्यो भलो बलिहारियां मोहन वे बलिहारियां ॥
संसार असार निसारन है रहती हमेस भय मरने की ।
अहशान वही साहब निदान लाजिम हारबार सँमरने की ॥
नर आसन में तू परा है कस अस समय नहीं बन परने की।
अब मकर न कर कर जिकर यही कैलासपती पग धरने की ॥
मोहिं किये बस मोह महा मदमत्त गयन्द गुमानउ हारै ।
क्रोध बली बलवन्त बड़ो जब आवत अङ्ग अभङ्ग कै डारै ॥
थिरता न लहै चित बृत्ति जबै घटिका जो अनङ्ग तरङ्गन मारै ।
साहबदीन जो लोभ जगै तो बिना करुणानिधि कौन सम्हारै ॥
डौरू डिमक डिमक बाजै कर ठाढ़ा ही बैल तड़कत है ।
सीस जटा जहँ गङ्ग बहै वाके पांय पदुम्म झलकत है ॥
हारे बिछौना बघम्बर के कर ऊपर ब्याल लहकत है ।
लखि आई सखी तेरे शङ्कर को हिय मांहि हमारे खटकत है ॥

दोहा ।

कलियुग केशव नाम से सुफल होत सब काम ।
अन्तकाल यम से छुटत बिहरत गोकुल धाम ॥ ८० ॥

कवित्त ।

बेनी गठिबन्धन को बसन भुजङ्गपुच्छ उमा के बिवाह लोग संकित सहर को । लोचन अनल भाल रोचन सक्यो न करि सोचत पुरोहित बिलोकै मुख बर को ॥ भूत प्रेत डाकिनी पिशाच मड़वे में फिरैं फफाकि फफाकि फनी उगलैं जहर को । कहां नेग योग जीव बचे को न योग तहां गारी देत मांगे नेग-दारी सबै घर को ॥ ८१ ॥

छलन सो छैल तजी गोकुल की गैल लगी कुबिजा चुरैल पगी मन बचकाय है । आप सुकुमारी हमैं करत भिखारी प्रीति पाछिली बिसारी ये कहां जू कौन न्याय है ॥ ब्रजकाम जीते ब्रजबाम सबहीं ते ये ममारख अनीते जी ते लगी सो जनाय है । मरन उपाय है बचै न कोऊ पायहै जो काहू कलपायहै सो कैसे कल पायहै ॥ ८२ ॥

सवैया ।

रामकी बाम जो आनी चुराय सो लंक में मीचु की बेलि बई जू ।
क्यों रण जीतहुगे तिनसों जिनकी धनुरेख न नांघि गई जू ॥
बीस बिसे बलवन्त हुते जो हुती दृग केशव रूप-रई जू ।
तोरि शरासन शङ्कर को पिय सीय स्वयम्बर क्यों न लई जू ॥
सिद्धि समाज सजै अजहूं कबहूं जग योगिन देख न पाई ।
रुद्र के चित्त समुद्र बसै नित ब्रह्महु पै बरणी जो न जाई ॥
रूप न रेख न रङ्ग बिशेष अनादि अनन्त जो बेदन गाई ।
केशव गाधि के नन्द हमैं वह ज्योति को मूरतिवन्त देखाई ॥

दोहा।

को बरणै रघुनाथ छबि-केशव बुद्धि उदार।
जाकी सोभा सोभियत सोभा सब संसार॥ ८५॥

कवित्त।

कौड़ी पै कनौड़े द्वार दौड़े फिरैं कूकुर सों खोवैं जो पचास आस पाये पांच दाम जो। जासो लघु लाभ देखैं ताहिं को न पूछैं बात पाये बिन काहू के न करैं भले काम जो॥ भनै बिजै-भूप रूप नीति को न जानैं ख्याति लीबो अनुरूप परजा के धन धाम जो। स्वामी के बिगारि काम आपनो सवांरि धाम ओई बदकार मंत्री होत बदनाम जो॥ ८६॥

दोहा।

रामचन्द्र रघुबंशमणि प्रबल प्रताप निधान।
आगम निगम पुराण नित मानत परम प्रमान॥ ८७॥
आये री घनश्याम नहिं आये री घन श्याम।
केकी कूजत मुदित मन नचत बियोगिनि-बाम॥ ८८॥
अतन करै शर को पतन हरि बिन मोतन मांह।
को जानै ह्वैहै कहा अब आयो ऋतुनाह॥ ८९॥
सखा चन्द की चांदनी तातो करत शरीर।
छुन छुन सरसत असम-शर लागत मलय-समीर॥ ९०॥
मन तो मेरो तुम लियो मन बिन तन केहि काज।
की मन देहु दया करौ की तनमन तजि लाज॥ ९१॥

आवन कहि आये नहीं मम कपटी चितचोर।
मदन प्राण-ग्राहक भयो तुम बिन नन्दकिशोर ॥ ९२ ॥
बोले ते बोले नहीं अनबोले जिय लेत।
रसिक लाल या निठुर सों कैसे कीजै हेत ॥ ९३ ॥
नैनों के नोके बुरे उर सालत ज्यों तीर।
ढूंढे घाव न पाइये बेध्यो सकल शरीर ॥ ९४ ॥
केतिक पनिघट घाट में केतिक हाट बजार।
रसिकलाल नैनान के मारे परे हजार ॥ ९५ ॥
जब सुधि आवत मित्र की बिरह उठत तन जागि।
ज्यों चूने कीं कांकरी जब छिरकहु तब आगि ॥ ९६ ॥
जाकी जासो लगन है रोकि सकै धौं कोय।
नेह नीर इक सम बड़े रोके दूनो होय ॥ ९७ ॥
जाकी जासो लगन है कहां जाति कह पांति।
गुदरो कैसे ठींकरी अपनी अपनी भांति ॥ ९८ ॥
तुम सुजान अलगरज हौ गरज बड़ी इत मोहिं।
दरस देत इन नैन को खरच लगत का तोहिं ॥ ९९ ॥
रसिक लाल की अरज सुनि इतनो यश करि देहु।
की हँसि हेरो नजरि भरि की हमरो जिय लेहु ॥ १०० ॥

कवित्त।

आनन्द अशेष देन राखत कलेश नहि राजत गणेश दिशि एक छबि छाकी है। एक दिशि दिपत दिनेश सब देश देश मेटत हमेश तम तोम दुति भाकी है ॥ एक दिशि लछमी भारा·

यण अनूपम है एक दिशि मूरति बिशाल गिरिजा की है। हृदयारविन्दहि बसिन्द हित मीत सीस मध्यमाग भ्राजत गुमानेश्वर झांकी है॥ १॥

अम्बर अरुण अरुणोदय प्रभा को देत माला मुक्ता मांग में मने हरत बल सों। राजत प्रभात पर्य्यंक पै मयंकमुखी जगमगी ज्योति हीर हारन अमल सों॥ द्विज बलदेव केश छूटी लटैं आनन पै तिनको हटावै मुख मंजुल के थल सों। तारन के मण्डल में तिमिर बिचार मानो कालीनाग टारत कलानिधि कमल सों॥ २॥

विद्रुम की व्यंच पै बिराजत बिचित्र बाल मुकुलित माला मुक्तहीर उर भावतो। छूटी लटैं कुटिल कपोल कुच मण्डल लौं कर सों सुधारत सुकबि छबि गावतो॥ तारन की अवली कनक लतिका पै लसै उपमा अतूल बलदेव चित लावतो। मानों शम्भु शीश चढ़े पन्नग पियूष पीवैं तिन को कमल सो कलानिधि हटावतो॥ ३॥

गुंजत भ्रमर तार तारन सितार तार अतर फुहार मंजु बंजुल समीर के। बंसन-बिवर बंसी धुनि सुनि मनहर भूरुह गनप शब्द मुरज गँभीर के॥ साखा लपटान छुटि भेटन फटान भाव पिक प्यौ रटान छटा गान सम तीर के। नृतक अपार कोकिलाली आली ठौर ठौर देखत बसन्त नृत्य धारन सुधीर के॥

कवित्त ।

सन्त असन्त न धीर धरैं सु कहा अबला निशि बासर अन्त की।

अन्त की बोल सुनावत कोकिल पीव कहाँ पपिहा गनगन्त की ॥
गन्त की औध के धोस अली गनपाल सबै शरणागत तन्त की।
तन्त की कीरति कन्त असन्तन ताप परी बधिकाई बसन्त की ॥

सवैया।

गुल गुललाला औ गुलाब गुलचीनी गुलदाउदी बिशद गुलसब्बो बिलगात है। चम्पक चमेली चारु चन्दन रु चांदनी से केवरा कुसुम केतकी के सरसात है॥ बेला बेल बिशद बिसाल बेली सोहियत रस के बिसाल जूही जूथिक जमात है। सूरज-मुखी औ स्याम सेमर लसत नभ शरद बदर फूल बाग सो लखात हैं॥ १॥

छप्पै।

जहां उदित कचराज तहां देखत मुख इन्दै।
जहां इन्दु को बास तहां फूल्यो अरबिन्दै॥
जहां बसत सु मनोज तहां बिबि शम्भु छवासी।
पञ्चानन कटि जहां तहां गजमत्त गवासी॥
गोपी कवित्त अचरज्ज यह अरि अरि सब संगै रहत।
अति राजनीति तियतन नगर रिपुरमिलि छबि को गहत॥
न कछु क्रिया बिन बिप्र न कछु कादरजिय छत्री।
न कछु नीति बिन नृपति न कछु अच्छर बिन मंत्री॥
न कछु बाम बिन धाम न कछु गथ बिन गरुआई।
न कछु कपट को हेत न कछु मुख आपु बड़ाई॥

न कछु दान सन्मान बिन नष्ट कुमोनन जासु दिन ।
यह कबित सु नरहरि उच्चरै कछु न जन्म हरिभक्ति बिन ॥
नेकबख्त दिलपाक वही जो मर्द सेर नर ।
अव्वल वली खोदाय दियो बिसियार मुलुक जर ॥
तुम खालिक दुर वेश हुकुम पाले सब आलम ।
दौलत वख्त बुलन्द जङ्ग दुश्मन पर जालम ॥
ऐ शाह तुरा गोयद खलक कवि नरहरि गोयद अजचुनी ।
अकबर बराबर पादशाह मन्दिगर न दीदम् दर दुनी ॥ ९ ॥
तदिन सत्य जनि जाइ जदिन कोउ याचक जच्चै ।
तदिन सत्य जनि जाइ जदिन पर घर मन रच्चै ॥
तदिन सत्य जनि जाइ जदिन कोउ शरणहि आवै ।
तदिन सत्य जनि जाइ जदिन अरि सन्मुख धावै ॥
जनि जाइ सत्य नरहरि कहै बरु बिधना प्राणनि हरै ।
गोरच्छ अकब्बर साह सुनु सत्य सुमङ्गल ना टरै ॥ १० ॥

सवैया ।

ऐसे बने रघुनाथ कहै हरि काम कला छबि के निधि गारे ।
झांकि झरोखे सो आवत देखि खड़ी भई आनि कै आपने द्वारे ॥
रीझी सरूप सौं भीजी सनेह यों बोली हरे रस आखर मारे ।
ठाढ हो तोसों कहौंगी कछू अरे ग्वाल बड़ी २ आँखिनवारे ॥

कवित्त ।

फूलन सों बाल की बनाय बेनी गुही लाल भाल दीनी

बेंदी मृगमद को असित है। अङ्ग अङ्ग भूषण बनाय ब्रजभूषण जू बीरी निज कर ते खवाई करि हित है॥ ह्वै कै रस बस जब दीबे को महाउर को सेनापति श्याम गह्यो चरण ललित है। चूमि हाथ लाल के लगाय रही आंखिन सों येहो प्राणप्यारे यह अति अनुचित है॥ १२॥

सवैया।

मेरी बियोग-बिथा लिखिबे को गणेश मिलैं तो उन्हीं ते लिखाओं।
व्यास के शिष्य कहां मिलैं मोहिं जिन्हैं अपनो विरतान्त सुनाओं॥
राम मिलैं तो प्रणाम करौं कबितोष बियोग-कथा सरसाओं।
पै इक सांवरे मीत बिना यह काहि करेजो निकारि दिखाओं॥

कबित्त।

चित्त को भ्रमावैं छबि देखैं तहां जावैं चाह दूनी उपजावैं इन ऐसी रीति डारी है। नीर झरि लावैं तन हूक ना बुझावैं चैन पलक न लावैं नींद अनत सिधारी है॥ कहिये कहा री नेक मानत न हारी हम अति मनहारी ये कुपन्थ पगधारी हैं। तन तें मिली रहत मन में न लावैं नेक आंखैं ये हमारी कहिबेई को हमारी हैं॥ १४॥

सुरँग रँगीले अरसीले सरसीले सर सरस नुकीले मटकीले कीले काम के। सरबर मीले दरसीले सरसीले नीले सुन्दर सुसीले उनमीले आठो याम के॥ छाजत छबीले जसवन्त गरबीले वेस लाजत लजीले जलजात अभिराम के। चोखे चटकीले झमकीले चमकीले चारु सोहत धतीले ये जतीले नैन बाम के॥

सवैया।

ए करतार बिनै सुनि दास की लोकन के अवतार करो जनि।
लोकन के अवतार करो जो तो मानुषही को सवाँर करो जनि॥
मानुषही को सवाँर करो तो तिन्हैं बिच प्रेम प्रचार करो जनि।
प्रेम प्रचार करो तो दयानिधि केहू बियोग बिचार करो जनि॥
गिरि सों गिरिबो मरिबो बिष सों निज हाथ सों काटिबो नीको गरे को
पावक में जरिबो है भलो परिबो भलो सिन्धु मे जन्म भरे को॥
त्यागिबो है सुरलोक को नीको सु और सही दुख नेक परे को।
होत कलेस न जो इतने में सु होत बिदेसी सों प्रीति करे को॥

कबित्त।

तुमहीं बिचारो निरधारो प्रेम-पन्थन में भारी भारी ग्रन्थन में कैसी निसरत है। कहां आवै कहां जांय कासो कहै कौन सुनै मनसा बिकल याही मांझ मिसरत है॥ ठाकुर कहत चित्त चलन ललन प्यारे न्यारे ह्वै सिधारे या निराली कसरत है। जासों मन लागो नैन लागे लगी प्रीति पूरी ताकी कहू सूरति बिसारे बिसरति है?॥ १८॥

मधुर मधुर मुख मुरली बजाय धुनि धमाकि धमारन की धाम धाम कै गयो। कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरन को करि कै चलाचली छलाछली चितै गयो॥ को है वह ग्वाल जो गुवालन के सङ्ग में अनङ्ग छबि वारो रसरङ्ग मे भिजै गयो। बै गयो सनेह फिरि छ्वै गयो छरा को छोर फगुआ न दै गयो हमारो मन लै गयो॥ १९॥

मोहिं तजि मोहमै मिल्यो है मन मेरो दौरि नैनहूं मिलै हैं देखि देखि साँवरे शरीर। कहै पदमाकर त्यों तान में सु कान गये हौं तो रही जकि थकि भूली सी भ्रमी सी बीर॥ येतो निरदई दई इनको न दया दई ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरों तन धीर। होतो मनहूं के मन नैनहू के नैन जो पै कानन के कान तो ये जानते पराई पीर॥ २०॥

प्रात उठि मज्जन कै मुदित महेश पूजि षोड़स प्रकार के विधान विधि ओर की। आवाहन आदि दे प्रदच्छिणा परी है पाँय दोऊ कर जोरि सिर ऊपर निहोर की॥ आरसी अँगूठी मध्य लख्यो प्रतिबिम्ब प्यारी मनै रघुनाथ जरदाई मुख कोर की। मेरी प्रीति होय नन्दनन्दन सो आठौं याम मोसों जनि प्रीति होय नन्द के किशोर की॥ २१॥

जैसी छबि श्याम की पगी है तेरी आँखिन में वैसी छबि तेरी श्याम-आँखिन पगी रहै। कहै पदमाकर ज्यों तान में पगी है त्योहीं तेरी मुसकानि कान्ह प्राणन पगी रहै॥ धीर घर बीर घर कीरतिकिशोरी भई लगन इतै उतै बराबर जगी रहै। जैसी रट तोहिं लागी माधव की राधे ऐसी राधे राधे राधे रट माधवै लगी रहै॥ २२॥

एकै साथ धाये नन्दलाल औ गुलाल दोऊ दृगन गये री भरि आनन्द मढै नहीं। धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सौंह अबतो उपाय एको चित्त पै चढै नहीं॥ कहां आवैं कहां जाय कासो कहैं कौन सुनै कोऊ तो बताओ जासों दरद बढै नहीं।

येरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आँखिन तें कढ़िगो अबीर पै अहीर तो कढ़ै नहीं ॥ २३ ॥

सवैया ।

वा निरमोहनि रूप की राशि जो ऊपर के उर आनत ह्वैहै ।
बारहिं बार बिलोकि घरी घरी सूरति तो पहिचानत ह्वैहै ॥
ठाकुर या मन की परतीति है जो पै सनेह न मानति ह्वैहै ।
आवत है नित मेरे लिये इतनो तो विशेषहुँ जानति ह्वैहै ॥२४॥

अब का समुझावती को समुझै बदनामी के बीज तो बो चुकी री ।
तब तो इतनो न बिचार कियो यह जाल परे कहो को चुकी री ॥
कबि ठाकुर या रस रीति रँगे सब भांति पतिब्रत खो चुकी री ।
अरी नेकी बदी जो बदी हुती भाल में होनी हुती सु तो हो चुकी री

जिय सूधे चितौनि की साधै रही सदा बातन में अनखाय रहे ।
हँसि कै हरिचन्द न बोले कबौं दृग दूरिहिं से ललचाय रहे ॥
नहिं नेक दया उर आवत है करि के कहा ऐसे सुभाय रहे ।
सुख कौन सो प्यार दियो पहिले जेहि के बदले यों सताय रहे ॥

छोड़ि कै प्रीति प्रतीति लला इन बातन सों मनि बान से हूलियो ।
मांगत हैं इतनो तुमसो हमरे हिय पालन में नित झूलियो ॥
जोरि कै हाथ कहै हरिचन्द हमारी यहै बिनती सो कबूलियो ।
आवो न आवो मिलो न मिलो पै हमैं अपने चित सों मति भूलियो

द्वारेही आइ कढ़ै कबहूं कबहूं मृदु गाय कढ़ै पिछवारे ।
बेनी पितम्बर की कछनी कबहूं सिर ऊपर मोर सँवारे ॥
एक उपाय अनेक कला नँदनन्दन चाहत चित्त हमारे ।

भाजे कहां लो बचैं सजनी कहूं गाजैं टरै टटकान के टारे ॥
आये हो ऊधो भले ब्रज में बहुतै दिनतें करती उर जापनो।
आइये बैठिये माधन पै संग साथिन में गनती तुव थापनो ॥
श्याम की बातें कछू न कहो जिन छोड़ दियो पितु मातहु आपनो।
और कहा चहो सो ना कहो पहिले कहो कूबरि को कुशलापनो॥
कहां कलकंचन से तन सो औ कहां यह मेचन सो तन कारो।
सेजकली बिकली वह होत कहां तुम सोइ रहो गहि डारो ॥
दासजू ल्यावही ल्याव कहो कछू आपनो वाको न बीच बिचारो।
कौल सी गोरी किशोरी कहां औ कहां गिरिधारन पाणि तिहारो॥
कामरी कारी कँधा पर देखि अहीरहिं बोलि सबै ठहरायो।
जोइ है सोइ है मेरो तो जीव है याको मैं पाय सभी कछु पायो॥
कामरी लीन्हो उढ़ाय तुरन्तहिं काम री मेरो कियो मन भायो।
कामरी तो मोहिं जारो हुतो बरु कामरी-वारे बिचारे बचायो॥

कबित्त।

छूट्यो गेह काज लोकलाज मनमोहनी को छूट्यो मनमोहन को मुरली बजाइबो। देखि दिन दू में रसखानि बात फैलि जैहै सजनी कहां लों चन्द हाथन दुराइबो॥ कालही कलिन्दी तीर चितयो अचानक हौं दोउन को दुहूं दुरि मृदु मुसकाइबो। दोऊ परैं पैयां दोउ लेत हैं बलैयां उन्हैं भूलि गई गैयां उन्हैं गागरि उठाइबो॥ ३२॥

सवैया।

का कहिये परधीन भई गुरुलोगन में निशिबासर जीजिये।

ना तरु लाख बने बिगरै निज अंक भुजा भरिकै मिलि लीजिये॥
ठाकुर आवत यों मनमें कुलकानि को आजु बिदा करि दीजिये।
जो अपनो बस होइ सखी तो गोपालहिं आंखिन ओट न कीजिये॥

नैनन नीर न धार अपार न हां करि सांस भरै सुख कन्द को।
चापलता दरसाय रही बलदेव कहो सो बिचारि ले मन्द को॥
लोक की लाज नहीं पटकी न तो तोर्‍यो अबै जग जाल के फन्द को।
नाहक नेह की बातैं करै अरी नीके न तू निरख्यो नदनन्द को॥

सांकरी खोरि में सांवरे सों जुड़ी दीठि सों दीठि मुकालिबे की।
हग देखि दली सकुची सिमटी सुधि ना रही घूंघुट घालिबे की॥
यह धौं अपराध लगायो कहा पर ती के नहीं चित सालिबे की।
यहि गांव-चवाइन सों मिलि कै परी प्रीति पतिब्रत पालिबे की॥

ये ब्रजचन्द गोबिन्द गोपाल सुनो न क्यों केते कलाम किये मैं।
त्यों पदमाकर आनँद के नन्द हौ नन्दनन्दन जानि लिये मैं॥
माखन चोरिकै खोरिन ह्वै चले भाजि कछू भय मानि जिये मैं।
दौरिहूं दौरि दुर्‍यो जो चहो तो दुरो क्यों न मेरे अँधेरे हिये मैं॥

कासों कहौं कोउ पीर न जानत तासों हिये की बतैयतु नाहीं।
चौचँद ठाकुर है ब्रज में त्यहि ते छन ही छन ऐयतु नाहीं॥
आय कै राह में भेंट भई छनएक मिले ते अघैयतु नाहीं।
अङ्क लगाइ कै जीबो चहैं तिन्हें आंखिन देखन पैयतु नाहीं॥

अँग आरसी से जो पै भाषत हौ हरि आरसीही को सवाँरा करो।
सम नैन के खंजन जानत तो किन खंजनही को इशारा करो॥
कबि शंकर शंकर से कुच जौ कर शंकर ही पर धारा करो।

मुख मेरो कहो जो सुधाकर सों तो सुधाकर क्यों न निहारा करो॥
चन्दन पंक गुलाब के नीर उसीर को सेज बिछाइ मरो री।
तूल भयो तन जात जरो यह बैरी दुकूल उतार धरो री॥
देव जू सीरे सबै उपचार यही में तुसार को भार भरो री।
लाज के ऊपर गाज परै ब्रजराज मिलैं सोइ आज करो री॥
जान पखौवन की सुधि हेत मयूरन देतीं भगाय भगाय।
मने के दियो पियरे पहिराउ सुगांव में प्यादे लगाय लगाय॥
भुलावति वाके हिये ते हरी सुकथान में दासी पगाय पगाय।
कहा कहिये यह पापी पपीहा व्यथा हिय देत जगाय जगाय॥
बांसुरी छोरि कै सारँगी लैकर नारँगी पीत पटै रँगवायो।
मोर को मौर बिहाय गदाधर छोरि लटै नट वेष बनायो॥
गांवत राग बिराग भरे अलि फेरि कै मेरे दुवार लौं आयो।
येती करी मोहिं देखिबे काज अभागी मैं कान्ह हिये न लगायो॥

कबित्त।

राजपैरिया के वेष राधे को बुलाय लाई गोपी मथुरा ते मधुबन की लतानु में। कही तिन आय तुम्हैं राजा कंस चाहत हैं कौन के कहे ते यहां लूटो दधि दान में॥ सङ्क के सकाने गये डगर डराने हिये श्याम सकुचाने सो पकरि कियो पानि में। छूटि गयो छल वा छबीली को बिलोकन में ढीली भई भौंहैं वा लजीली मुसकान में॥ ४२॥

सवैया।

छितिपालन के दरबारन में अपकारी अपार अभागे मिले।

सुर-थानन तीरथ क्षेत्रन में झगरावल प्रोहित नांगे मिले ॥
कवि शंकर पास भले के बुरे बसैं फूल में कएटक लागे मिले।
हम लेन गये फल मीठे जहां तहां कूर बबूरहिं आगे मिले ॥

कवित्त।

देखि लेती दृग भरि हरि धरि धीर आली चौगुनो चवाव फेरि कूटती तो कूटती। करि लेती मन के मनोरथ प्रवीन बेनी प्रीति पंथवारी फेरि टूटती तो टूटती ॥ आवतो हमारी गैल छैल ब्रजचन्द प्यारो घैर घर बाहर की ऊठती तो ऊठती। लाय लेती छतिया में बतियाँ कै चित्तचाहि फेरि कुल गोकुल ते छूटती तो छूटती ॥ ४४ ॥

लावति न अंजन मँगावति न मृगमद कालिंदी के तीर न तमाल तरे जाति है। हेरत न घन गिरि गहन बनक बेनी बांधे ही रहत नीली सारी ना सोहाति है ॥ गोकुल तिहारी यह पाती बाँचिहैगो कौन याहू में तो कारे अक्षरान ही की पांति है। जा दिन ते लखे वा गवांरि गूजरी सों कान्ह तादिन ते कारो रँग हेरे अनखाति है ॥ ४५ ॥

कारो जल यमुना को काल सों लगत आली जानियत फैलि रह्यो विष कारे नाग को। बैरिनि भई है कारी कोयल निगोड़ी तैसी तैसही भँवर कारो बासी बन बाग को ॥ भूषण भनत कारे कान्ह को बियोग हमैं सबै दुखदाई भयो कारे अनुराग को। कारो घन घेरि घेरि मारो अब चाहत है ताहू पै भरोसो करै आली कारे काग को ॥ ४६ ॥

नित उठि आनि इत बोलि बोलि जात वेऊ झूठ भये बोल सबै बायस बिहङ्ग के । पतिया तिहारी तेऊ झूठ ये निवाज कबि झूंठे दृग फरकैं हमारे बाम अङ्ग के ॥ कारे काग झूंठे कारे कागदौ तिहारे झूंठे कारे ये हमारे नैन झूंठे बिन ढङ्ग के। कान्ह एक तुमहीं न मिले हमैं झूंठे सब झूंठे मिले दई के सँवारे कारे रङ्ग के ॥ ४७ ॥

को हौ ज्योतिषी हैं कछू ज्योतिष बिचारि देखो याही धाम धाम काम जाहिर हमारो तो । आओ बैठि जाओ पां छुआओ पान खाओ नीके चित्त सों सुचित्त ह्वैकै गणित बिचारो तो ॥ ठाकुर कहत मेरे प्रेम की परिच्छा शिच्छा इच्छा को प्रतीति ताहि नीके निरधारो तो । मेरो मन मोहन सो लागि रह्यो भांति भांति मोंसों मन मोहन को लागिहै बिचारो तो ॥ ४८ ॥

ज्योतिष के धारी कह्यो पण्डित पुकारी हम देख्यो है बिचारी भारी भाग है तिहारो तो । तेरे रस बस कान्ह यश को सराहत हैं ।मिलिबे के काज धेनु बन बन चारो तो ॥ कहत अनन्द यह चन्दमुखी साच मान नन्द डर मान्यो तासो भयो है नियारो तो । धीर नेक धारो उर टारो दुख सारो सुख मिलै नन्दवारो प्यारो ऐसही बिचारो तो ॥ ४९ ॥

भृकुटी तनी को सीसफूल की कनी को सोभा सकल सनी को ऐसो फूलो कंज फीको है । मैन की मनी को मैन-बान की अनी को पैन देन है धनी को हास हुलसनि ही को है ॥ रूप अवनी को कहा रमा-रमनी को गजगति गमनीको लखि जीव

मैलजी को है। विश्वबन्दनी को मन्द हास कन्द नीको मुख चन्दहू सों नीको बृषभान-नन्दनी को है ॥ ५० ॥

कूबरी की यारी को न सोच हमैं भारी ऊधो एकै अपसोस सांवरे की निठुरान को। योग जो लै आये सो हमारे सिर आखन पै राखन को ठौर तन तन को न आन को॥ अङ्ग अङ्ग ब्रती हैं बियोग ब्रजचन्द जू के औध हिये ध्यान वा रसीली मुसकान को। आंखैं अँसुवान को करेजो मैन-बान को औ कान बंसीतान को जुबान गुनगान को ॥ ५१ ॥

उझकि झरोखे झांकि परम नरम प्यारी नेसुक देखाय मुख दूनो दुख दै गई। मुरि मुसक्याय अब नेकु ना नजरि जोरै चेटक सो डारि उर औरै बीज बै गई॥ कहै कवि गङ्ग ऐसी देखी अनदेखी भली पेखै ना नजरि में बिहाल बाल कै गई। गासी ऐसी आंखिन सों आँसी आँसी कियो तन फांसी ऐसी लटनि लपेटि मन लै गई ॥ ५२ ॥

सवैया ।

जानत तेई तुम्हैं जेइ जान गुमान भरे अपने मन में हौ।
प्यार तें कोऊ कछू ना कहै बक हौ जू परे झख मारत रैहौ॥
दूध औ पानी जुदो करिबे को कहै जब कोऊ कहा तब कै हौ।
श्वेतही रङ्ग मराल भए अब चाल कहौं जू कहां वह पैहौ॥

एकै कहैं सुख माल हरैं मन के चढ़िवे की सिढ़ी इक पेखैं।
कान्ह को टोनों कियो कछु काम कबीश्वर एक यहै अवरेखैं॥

राधिका की त्रिबली को बनाव बिचारि बिचारियेहै हम लेखैं।
ऐसी न ओर न ओर न ओर है तीनि सचाव दई बिधि रेखैं ॥५४॥

कबित्त।

मोसों कै करार गयो लम्पट लबार मन मानि अति बार मैं सिंगारऊ बनायो री। छोड़ि कुललाज छोड़ि सखिन-समाज सखि छोड़ि गृहकाज ब्रजराज मन लायो री॥ कुंज निशि जागी बन सिंह प्रेमपागी मन एकऊ न लागी अब शुक उड़ आयो री। सेइ बनमाली घेरि आये बनमाली भ्रमरे लागे बनमाली बन-माली तो न आयो री॥ ५५ ॥

चक्रवाक चकित चकोर मृग मीन मोर खंजन कपोत पिक चातृक चितै रहे। हिलत न पौन बन डोलत न चम्पडार चलत न चन्द रवि दङ्ग मन ह्वै रहे॥ बांसुरी बजाइ कान्ह नन्दन करत गान गोपी ग्वाल जीव जन्तु आनन्द उदै रहे। कंजनाल कुंजर पराग रस-भौंर जाल मोती मुख मेलत मराल मन दै रहे॥५६॥

सवैया।

सांकरी गैल में भेंट भई लखि बेनी बियोग व्यथान में ठाढ़े।
चाहभरे दृग दोऊ दुहू के समोइ रहे अति धीरज गाढ़े॥
आइ न कोउ परे यहि संक न अंक भरे अति आनँद बाढ़े।
ढीली रसीली लिये अंखिया मुख दोऊ दुहून को जोहत ठाढ़े॥
आवती जाती किती बटपूजन बाल वा काहू के सङ्ग सनै ना।
ठाढ़ो हुतो उत लालची लाल सों वाहू ते प्रेम सों जात बनै ना॥

बीति गई तीथि यों परमेश सो आनि तियानि को कानि मनै ना ।
साँवरी सूरत में अट की बटकी भटू भाँवरी देत गनै ना ॥५८॥

बहु ज्ञान कथानि ले थाकी हौं मैं कुल कानिहु को बहु नेम लियो ।
यह तीखी चितौनि के तारन ते मनिदाम तुणीर भयोइ हियो ॥
अपने अपने घर जाहु सबै अबलौं सखि सीख दियो सो दियो ।
अबतो हरि भौंह कमाननि हेतु हौं प्राणन को कुरबान कियो ॥

दास परस्पर प्रेम लखो गुन छीर को नीर मिले सरसातु है ।
नीर बेचावत आपनो मोल जहां जहां जाइ के छीर बिकातु है ॥
पावक जारन छीर लगे तब नीर जरावत आपनो गातु है ।
नीर की पीर निवाहिबे कारण छीर घरी ही घरी उफनातु है ॥

घर बाहर के सब घेरे फिरैं जो अकेले कहूं करि पाइये तो ।
उनहीं की सबै मरजी की कहैं अपने जिय की समुझाइये तो ॥
कहि ठाकुर लाल के देखिबे को अब मंत्र यही ठहराइये तो ।
बतियां कहिबो जिनसों न बनै छतियां कहो कैसे लगाइये तो ॥

एक वहै मुख देखाई भावन बादि सबै मिलि माड़ती राहो ।
कीजै कहा बस है न कछू सिगरी मिलि दाहन आइ तो दाहो ॥
मोहिं न काज कछू कुलकानि सो जाहि निबाहन है सो निबाहो ।
मेरो तो माई उहै उर आनि रह्यो गड़ि गैयन को चरवाहो ॥

कबित्त ।

नैन नीको मृग को सुबैन नीको कोकिल को सैन नीको तीको गैन नीको बाज ताज को । चैन नीको ही को सुरैन अष्टमी को नीको ध्येन छन्द नीको देन नीको नीको नाज को ॥ स्वेन

नीको गङ्ग को बजैन बेन ही को नीको ऐन नीको देव को सुपैन मैन साज को। दण्ड नीको दण्डि को घमण्ड गोड़ही को नीको खण्ड नीको भारत अखण्ड नीको राज को ॥ ६३ ॥

कारे घुघुरारे कच बिकच सकुच तजि नैन ये हमारे छबि छैल फाँस फँसिगो । उर बनमाल चारु चन्दन रुचिर भाल लोचन बिशाल भाल हेरि हिये धँसिगो ॥ कृष्णसिंह सांवरी सी मूरति मनोजमई निशि दिन हेरि हेरि अङ्ग अङ्ग रसिगो । कहौ सब डंक दै न रहो कछु शंक अब मो मन मयंक में कलङ्क कान्ह बसिगो ॥ ६४ ॥

सवैया ।

धनि हैं गे वे तात औ मात जयो जिन देह धरी सो धरी धनि हैं।
धनि हैं दृग जेऊ तुम्हैं दरसैं परसैं कर तेऊ बड़े धनि हैं ॥
धनि हैं ज्यहि ठाकुर ग्राम बसो जहँ डोलो लली सो गली धनि हैं ।
धनि हैं धनि हैं धनि तेरो हितू ज्यहि की तू धनी सो धनी धनि हैं ॥

कबित्त ।

तूहीतो कहै री मनमोहन लखे मैं मनमोहन लखे को एको लच्छण लहोती तैं । बसिये गोबिन्द सुधि बुधि है सबै तो तोहिं दीन्हीं ना अजौं लौं लोक-लाजहिं चुनौती तैं ॥ चङ्ग होतो चित्तरी कुरङ्गनैनी कैसे गन अङ्गनि अनङ्ग बारी अगिनि अगोती तैं । बावरा भई है तैं न सांवरी सबीह देखी सांवरी सबीह देखि बावरी न होती तैं ॥ ६६ ॥

सवैया ।

द्वारिया द्वार के पौरिया पौरि के पाहरू ये घर के घनश्याम हैं ।
दास हैं दासी सखीन के सेवक पाय परोसिन के धनधाम हैं ॥
श्रीपति कान्ह भये नित भांवरे मानभरी सतभामा सी बाम हैं ।
एक यही बिसराम थली वृषभान-लली के गली के गुलाम हैं ॥

कवित्त ।

मोहीं में रहत सदा मोहू ते उदास रहै सिखत न सीखहू सिखाये निरधार्‍यो है । चौंको सो चको सो कहूं जक सो जको सो कै उपाय नथ को सो भांति भांति न निहार्‍यो है ॥ ठाकुर कहत हित हांसवारी बातन में जानत न हरि सों कहां धौं बोल हार्‍यो है । ऐसो चित्त चातुर सयान सावधान मेरो ऐरी इन आँखिन अजान करि डार्‍यो है ॥ ६८ ॥

जौ लगि न काऊ पीर लागति है आप उर तौ लगि पराई पीर कैसे पहिचानिहौ ॥ जानत हौं न आजु लौं न लाग्यो नेह काहू सन जबै नेह लागिहै तो इतहू न मानिहौ ॥ चतुर कबीश कहैं मेरे कहिबे की बात नेकु ना रहैगी तू समुझि हिय ठानिहौ । जैसे तुम मोहिनी को लागत हो प्यारे लाल वैसे तुम्है कोऊ नीक लागिहै तो जानिहौ ॥ ६९ ॥

सवैया ।

जो मिलि है तुम को तुमहूं सो कहूं कोउ तोसों जु पै हित मानिहौ ।
बूझे ते और की और धुनैगो सुनैगो नहीं जिसकी जो बखानिहौ ॥

ये सबै मेरी कही शिवसागर तादिना ते तुम सांचु कै जानिहौ।
नेह सो देह दहैगी जबै तबै प्यारे पराई व्यथा पहिचानिहौ॥

सोरठा।

प्रीति सु ऐसी जान, काँटे की सी तौल है।
तिलभरि चढ़ै गुमान, तौ मन सूई डग-मगै॥

दोहा।

चढ़ि कै मैन तुरङ्ग पर चालिबो पावक माहिं।
प्रेम पन्थ ऐसो कठिन सब सों निबहत नाहिं॥

झूलना रामसहाय के—अलिफ़।

वह अलिफ इलाही एक है जी वहु भेष में आपु समाय रहा।
कहिं डोलता है कहिं बोलता है कहिं सुन्ता है कहिं गाय रहा॥
नहिँ और किसी से कहताहूं मैं अपना मन समुझाय रहा।
गुरु इश्क इसारा साहि दलै वाहिद में रामसहाय रहा॥ १॥

वह अलिफ इलाही एक है जी जिन टेक धरी सोइ पार पड़ा।
कसि कमर करेजा हाथ लिया मैदान इश्क में आनि अड़ा॥
यह भेद समुझि कर मूली पर मन्सूर भी तूर बजाय चढ़ा।
हद बेहद रामसहाय नहीं सिरहद में नेह निसान गड़ा॥ २॥

वह अलिफ इलाही एक है जी जिसे सेख बिरहि मन ध्यावता है।
कोई माला तसबी जपता है दै बांग कोई गुण गावता है॥
कोई जाय मनमारि मुराकिबे में कोई सून्य समाधि लगावता है।
हर हाल में रामसहाय वही इक रामरूप दरसावता है॥ ३॥

वह अलिफ इलाही एक है औ चहौ राम कहौ चहै रब्ब कहौ।
चहै काबा औ महजीद कहै चहौ ठाकुर द्वाराधाम कहौ॥
चहौ कहौ कटोरा अमृत का चाहौ कौसल का नाम कहौ।
तुम रामसहाय मिटाय दुई मनमस्त रहौ हरिनाम कहौ॥ ४॥
वह अलिफ इलाही पाकजात आनन्द ब्रह्म अविनासी है।
भरिपूर खुलासा नूर वही नहिं दूर सबन के पासी है॥
नहिं ऊंचा नीचा कम ज्यादा ज्यों का त्यों सब घट बासी है।
तू रामसहाय न जाय कहीं वह काया काबा काशी है॥
बे—बरकत बागि ताला को सब कुदरत का सामान हुआ।
अबगत सो आतस आबहवा परतच्छ जिमी असमान हुआ॥
भइ सूरति मूरति रङ्ग घने हरएक में नाम निशान हुआ।
पहिचानि ले रामसहाय उसे जेग जिस्म हुआ वह जान हुआ॥
ते—तरकस में ज्यों तीर भरे त्यों तन में स्वास सुमार कीजे।
यह खाली छोड़ना खूब नहीं निज नाम निसाम को ताकि लीजे॥
इस दमही का सब दमदमा दम टूट देह दीवार छीजे।
तेहि रामसहाय उपाय यही दिल देग में दम को दम दीजे॥
से—सेसाबित्त सन्तोष सील साँचा सुभाव भरपूरों का।
सिर बेचि के मरने को डरना यह खास खवास अधूरों का॥
बेइश्क इवादत कमरना दिन भरना काम मजूरों का।
खुश रहना रामसहाय सदा मजबूत मता मन्सूरों का॥ ८॥
जीम—जाग जाग ऐ जी जाहिल बेहोश पड़ा क्यों सोता है।
इस तन पिंजरे में आनि फँसा तू किस जङ्गल का तोता है॥

जो अबकी औसर चूक गया सिर पीटि सदां सों रोता है।
कहु रामसहाई रामनाम क्यों उमर अकारथ खोता है ॥ ९ ॥

हे–हाजिर रहियो हाकिम से जिसकी नगरी में रहता है।
इस जन्म जिमी के पट्टे में कुछ बाकी भी तू चहता है ॥
जो फिरे हुये हैं हाकिम से उन गब्बर का गढ़ ढहता है।
जो सन्मुख रामसहाय सदा सो आदि अन्त सुख लहता है ॥ १० ॥

खे–खैर इसी में जानै दिल जो खालिक से खुशहाल रहै।
गुरुज्ञान गरीबी सिफत् समा दुनियां में सीधी चाल रहै ॥
ना सोना चांदी माल रहै ना हीरा मोती लाल रहै।
तू रामसहाय बिचारि देखु आद्यन्त में एक अकाल रहै ॥ ११ ॥

दाल–दम् आता अरु जाता है सो तो तेरा पैगामी है।
दो मीर मलायक की दस्तक तुझपर मौजूद मुदामी है ॥
ऐसे पर भी कुछ गफलत् है तो आखिर को बदनामी है।
छिपि रहौगे रामसहाय कहां साहब तो अन्तर्य्यामी है ॥ १२ ॥

जाल–जाहिर सरह शरीकर हो अरु बातिन में मजबूत रहो।
दिल डोर तोरि कइ दुनियां की उस साहब से साबूत करो ॥
इस तन तस्बी में दम दाना मूरति सनेह ले सूत करो।
गुरुमन्तर रामसहाय जपौ बसि भरम भयानक भूत करो ॥ १३ ॥

रे–राह चलौगे जीधर की ऊधर को यकदिन आओगे।
गर काम करोगे दोजक का तो भिस्त में क्यों कर जाओगे ॥
जो बीज बबूर के बोओगे तो खुरमा क्यों कर खाओगे।
इन्साफ है रामसहाय यही अपना कीया फिर पाओगे ॥ १४ ॥

जे—जारी कर उस बारी से जो माफ तेरी तकसीर करै ।
या परमेश्वर की रीति नहीं जो आजिजें को ताजीर करै ॥
है बन्दे-नेवाज गरीबों का बहु जालिम् को जंजीर करै ।
साकिर रहु रामसहाय सदां जो चाहै सो रघुबीर करै ॥ १५ ॥
सीन—सदा तेरा संसार नहीं जिस को कहता तू मेरा है ।
फरजन्द फाँस जोरू ठगिनी घर भाठियारिन का डेरा है ॥
तू मोह मवास में मात रहा बे समुझ काल ने घेरा है ।
हुसियार हो रामसहाय सदां उठि लागु सबील सबेरा है ॥१६ ॥
शीन-शौक तुझे शिव मिलनेका तो पीर क प्याला पिउ भाई ।
करि दूरि तकब्बुर ख्याल खुदी तमकन्त तकल्लुफ दुनियाई ॥
यह प्रेम का पन्थ दुहेला है ना अकिल चलै ना चतुराई ।
मुरसिद की मेहर मुहब्बत से कुछ रामसहाय सनद पाई॥१७॥
स्वाद—सुलह राखु सतगुरु सेती तो काम तेरा सब जारी है ।
तप तीरथ पूजा नेम धरम पर एक उसीला भारी है ॥
परतीति करै सोइ पार पड़ै भव बूड़ै वे-अतिबारी है ।
श्रीरामसहाय दया सतगुरु की सांची बात बिचारी है ॥ १८ ॥
ज्वाद—जप्त कहां तिनके दिल को जिनने वहदत का जाम पिया ।
जब शौक होय तो शरम कहां डर डारि गरेबां चाख किया ॥
खुसियाल खुमारी ख्याल खुदी जगजाल से पैर निकार लिया ।
सब अङ्गमे एकै रङ्ग रचै स्वइ रामसहाय सन्दा सुखिया॥ १९ ॥
तो—तैयारी करु बांधि कमर इस तन तीरथ का मेला कर ।
घट भीतर तेरे ज्ञान गुरू तू चित अपने को चेला कर ॥

गम सादी दुख सुख दुनियां के सो सहज स्वभाव न झेला कर।
मुरशिद की मेहर सहाय सदा बेभरम खलक में खेला कर ॥२०॥
जो-जिकिर करो तो फिकिर छुटे नहि इकदिन जालिम लूटैगा।
मैदान मौत में यार तेरा यह तन तिनका सा टूटैगा ॥
जो मालिक से रूठोस हुआ फिर किसका ह्वै कर छूटैगा।
सुख पैहौ रामसहाय तभी जब भरम का भाँड़ा फूटैगा ॥ २१ ॥
ऐन—इश्क नहीं घर खाला का जो झप्पेती घुस जाओगे।
बिन पूछे याचे खोलि कमर आँगन में खाट बिछाओगे ॥
सिर काटि मनी को मैदाँ कर मुरशिद की ठोकर खाओगे।
तब रामसहाय मिटाय खुदी महबूब महल कहुँ पाओगे ॥२२॥
ग़ैन—गौर किया कर बहुतेरा बिन भेदी भेद न पावेगा।
उस अमर नगर की गैब गली बिन पूछें क्योंकर जावेगा ॥
सिर पांय भेती उलझाय रहा बिन समुझ कौन समझावेगा।
तू रामसहाय बिना मुर्शिद पानी में भीति उठावेगा ॥ २३ ॥
फ़े—फुर्सत का है वक्त अभी उठि बैठा अपना काम करो।
इस मन-मंजिल को तै करके फिर खोलि कमर आराम करो ॥
आशक तो नाम धराय चुके इस नाम को मत बदनाम करो।
तुम रामसहाई राम जपो सब और खियालैं खाम करो ॥ २४ ॥
क़ाफ़—कौल किया था क्यों तुमने जो तुम को काम न करना था।
क्यों पेट में पट्टा लिक्खा था जो दाम दिरम नहिं भरना था ॥
फिर कफनी क्योंकर पहिनी थी जो जीवतही ना मरना था।
सब छोड़ के रामसहाय तुझे अब ध्यान धनी का धरना था ॥

छोटा काफ़—करो सुगुल दिनरैन यही दिल अन्दर इश्क इलाही का।
ईमान मुसल्लम मौला से मजहब छोड़ो गुमराही का॥
इस हेत खेत में बीज बओ मत जोतो पैड़ा पाही का।
सुख सोओ रामसहाय सदा दुख मेटो आवा जाही का॥ २६॥
गाफ़—गिरह भरम की छूट गई तब जी जगदीश न दूजा है।
नेह नेमाज रु ज्ञान गुसुल परतीति प्रेम का पूजा है॥
नहिं जाप ताप नहिं और आप नहिं परगट है नहिं गूजा है।
श्रीरामसहाय दया सतगुरु का प्रेम पहेला बूझा है॥ २६॥
लाम—लबालब जाम हुआ तब क्यों न होय यह छलक २।
खिलरही चांदनी चारि तरफ महबूब क जिलवा झलक २॥
असमान इश्क से घूम रहा अकसर जमीन है थलक थलक।
दिल डूबि के रामसहाय देखि दरिया मुहीत है हलक २॥२८॥
मीम—मस्त मजाख फकीरों का इसलाम कुफुर से न्यारा है।
ह्यां दाल दुई को असर नहीं सब एक में एक पसारा है॥
स्थावर जङ्गम औ जीव जन्तु जग भांति भांति गुलजारा है।
आसक सहाय मन मुर्दों ने मजहब को मजहब मारा है॥२९॥
नू—नूर जमीं असमान अग्नि वह नूर पौन औ पानी है।
रवि चन्द नक्षत्रहिं नूर नूर सब माया नूर निसानी है॥
जीव नूर औ सीव नूर निज नूर ज्योति निर्बानी है।
देखो सहाय सूरति समाय सब सृष्टि नूर से सानी है॥ ३०॥
वाव—वही वही सब वही वही वह वारपार भरपूर रहा।
शिरमध्य समस्त मरेज सदां इस नूर में चकनाचूर रहा॥

गुरसेन सहूर से सूझि पड़ा बेबूझ बहुत दिन दूर रहा।
पीवो सहाय सब मस्तोंने यह नगद नशा मंजूर रहा ॥ ३१ ॥

हे—हरजाई हर चारतरफ हरि एक में हरि जो प्यारा है।
ह्यां होस के होस हवास खता अरु अकिल ने किया किनारा है॥
चतुराई चौपट ज्ञानगुरू विज्ञान खड्ग चौधारा है।
देखो सहाय सूरति समाय हर हाल में लाल हमारा है ॥३२॥

लामअलिफ—लाम में अलिफ मिला अरु अलिफ लाम में लीन भया।
तब कौन दूसरा हरफ कहे जब बुन्द में सिन्धु समाय गया॥
है आदि सनातन रूप वही ताजा ताजे पर नित्त नया।
सो सूझै रामसहाय तभी जब राम रूप की होय दया॥ ३३ ॥

ये—याद रहा यह एक हरफ जो मूल मतालिब है अपना।
पर पर कुरान के झगड़े में क्या मगज झुकाना औ खपना॥
आशिक को ऐन इमान यही समान सबी सब को सपना।
रामसहाय सुरामरूप वहि जापक जाप वही जपना॥ ३४ ॥

धनी धन्य पीर रोशन जमीर जिन सांचा सबक पढ़ाया है।
मोहिं जानि मुब्तदी बालबुद्धि सब हरफों में समझाया है॥
हैं कई बार भवसागर में सोते से गोता खाया है।
अब रामसहाय दया सतगुरु का ठीक ठिकाना पाया है॥ ३५ ॥

इति श्री अलिफनामा समाप्तम्।

कवित्त पावस।

कंचन के खम्भ तामे डोलत ललित डांड़ी डारे मखतूल तूल मणिन खटोलना। मूही सारी सोहे सिर सुन्दरी नवोढ़न के गावती मलारैं वारैं कोकिल को बोलना॥ जेवर जड़ाऊ ज्योति अङ्गन में डगमगे कहैं शिवनाथ कवि जाको कछु मोल ना। झुकि झकि झूलन झुलावती चपलनैनी सावन में श्यामा श्याम झूलन हिंडोलना॥ १॥

सवैया।

चूनरी चोखी चुईसी परै रंगबीर जरीन के पेन्हि उजेरे।
गावैं मलारन को चित चाय चलाय चितौनि के चाय घनेरे॥
बैठी हिंडोरे कहैं गुरदीन बिलोकि के के न भये चित चेरे।
झूलती झूलन हारी अजौं जिय में हिय में अँखियान में मेरे॥

कवित्त।

लागे अब धावन धुकारै दै दै बारिधर चावन समेत कीन्हों छावन सरग है। छूटैं जलधारैं तैसे चातृक पुकारैं लागी बिरह दवारैं लियो कानन को मग है॥ ससकि सलोनो कहै नैन जल पूरि पूरि शिवनाथ श्याम बिन सूनो सब जग है। प्यारे मन-भावन की सावन के आवन की औधि भई पावन की बावन को पग है॥ ३॥

कज्जल कलित तन पलित बलित भीम ताड़ित ललित हेम-हारे सुभ पथ के। गरजि तरजि बरसत जलमध्य भूमि भूधरन

मारे सबियोग योग गथ के ॥ ऐसे में न कीजिये पयान परदेश प्राणप्यारी यों कहत फरकत मोती नथ के। सावन सघन घन घूमत गगन मानों झूमत मतङ्ग अवनीप मनमथ के ॥ ४ ॥

घेरे घेरे घूमर धुंधारे धाये धराधर धरि के धरनि अब लागे जल छंडै ये। कहैं गुरुदीन तापै बोलत कलापी पापी डोलत समीर करैं धीरज के खंडे ये ॥ कहां जाउं कैसी करौं कासों कहों सुनै कौन लावत न जीहा तापै पपिहा प्रचंडे ये। अखिल ब्रह्मंडे तम मंडै है उदंडे घन घुमड़ि घमंडै बिन प्यारे तड़ि तंडे ये ॥ ५ ॥

जुगनू जमाती कैधों बाती बारि स्वाती प्राण ढूंढ़त फिरत घाती मदन अराती है। झिल्ली झननाती मननाती है बिरह भेरी कोकिला कुजाती मदमाती अनखाती है ॥ घटा घननाती सननाती पौन शिवनाथ फनी फननाती ये लगत ताती छाती है। सावन की राती दुखदाती ना सोहाती मोर बोलैं उतपाती इत पातिहू न आती है ॥ ६ ॥

धारे मघवारे बेसुमारे बनकारे परैं जात न संभारे पैन धारे ज्यों दुधारे की। झिल्ली झनकारे बैन बोलै दुखदारे कान फोरत हमारे जीम चातकी गँवारे की ॥ सारे ब्रजवारे मन-मारे तन जारे अहो थकतु निहारे बाट यमुना किनारे की। बैजनाथ प्यारे बिन ब्याकुल बिचारे प्राण सुनते दुखारे धुनि बारिद नगारे की ॥ ७ ॥

बाजत नगारे मेघ ताल देत नदी नारे झींगुरन झांझ

भेरी भेकन बजाई है। कोकिल अलापचारी नीलकण्ठ नृत्यकारी पौन बीनधारी चाटी चातक लगाई है॥ मनिमाल जुगनू ममारख तिमिर थार चौमुख चिराग चारु चपला जनाई है। बालम बिदेस गये दुख को जनम भयो पावस हमारे ल्याई बिरह बधाई है॥ ८॥

कोकिल के गावन की धुरवान धावन की बिज्जु चमकावन की पावन की परसनि। मदन सतावन की पीरी तन छावन की अवधि बितावन की नैनन की तरसनि॥ शिवनाथ चावन की चित्त ललचावन की ऊभी हंस कावन की बिरह की झरसनि। प्रीतम के आवन की हँसि उर लावन की सुधि सरसावनि की सावन की बरसनि॥ ९॥

फुही फुही बूंदे झरैं बीर बारिबाहन तें कुहू कुहू सुनि परै कूक कोकिलान की। ताहीं समै श्यामा श्याम झूलत हिंडोरे चढ़ि वारौं छबि कोटिन मैं रतिपंचवान की॥ कुण्डल लकट सोहैं भृकुटी मटक मोहैं अटकी चटक पट पीत फहरान की। झूलति समै की सुधि भूलति न हूलति री उझकनि झुकनि झकोरनि भुजान की॥ १०॥

मोर को मुकुट शीशभाल खौरि केसरि की लोचन बिशाल लखि मन उमहत है। मैन कैसे केश श्रुतिकुण्डल बखत बेस झलक कपोल लखि थिर ना रहत है॥ कुलकानि धीरज मलाह मतवारे दोऊ मदन झकोर तन तीर ना गहत है। श्याम छबि सागर में नेह की लहर बीच लाज को जहाज आज बूड़न चहत है॥ ११॥

सवैया।

ध्यान में ब्रह्म लखैं ते लखैं भय मानि हिये भवसिन्धु गँभीर को।
मोहिं न आवत नाक नचाय कै रोकिबो छोडिबो प्राण समीर को॥
कानन में मकराकृत कुण्डल खेलनहार कलिन्दी के तीर को।
भावत मोहि वहै हिय में नन्दगाँव को छोहरो नन्द अहीर को॥

आन न शम्भु लख्यो परिहै परिहै कहुँ दीठि जो सांवरो आनन।
मान न बावरी लोग लगैंगे जगैंगे अली उपहास अमानन॥
प्रानन को तजि देहै अरी करिहै पुनि केसहू खान न पान न।
कानन २ हीं फिरिहै जो कहूं मुरली-धुनि लागिहै कानन॥१३॥

लाज के लेप लगाय थके औ थके सब सीखि के मंत्र सुनाय कै।
गारुड़ी ह्वै कै थके सब लोग थके सब बासुकी सोहैं देवाय कै॥
ऊधो सो कौन कहै रसखानि जो कानि न मानत येतो उपाय कै।
कारे बिसारे को चाहै उतारो अरे बिष बावरे राख लगाय कै॥

जात नही महिमा रघुनाथ जो सेवरे मानै न देवधुनी को।
मोल घटै नहिं पांवरे पाय कै जो कोऊ देति है फेंकि चुनी को॥
मैली परै महिमा न कछू जो हँसै कोऊ पातकी देखि मुनी को।
ठाकुर कूर करै जो निरादर तो नहिं लागत दोष गुनी को॥

पण्डित पण्डित सों गुनमण्डित सायर सायर सों सुख मानै।
सन्तहिं सन्त भलन्त भले गुनवन्तन को गुनवन्त बखानै॥
सूर को सूर सती को सती कहि दास यती को यती पहिचानै।
जाकर जासन हेत नहीं कहिये सो कहा त्यहि की गति जानै॥

हाहा करौं बिनती परि पांय गहौं जनि मेरो दुकूल दुबार में।

देखती हैं ए गली में अली न चली कछु मेरो कहा घरबार में ॥
नाथ जू ह्वैकै कलंक हमैं तन भीजिहैं त्यों अँसुवान की धार में ।
येहो मुरारी सम्हारि कै काम करो जनि छूटै सँयोग बिहार में ॥

कुण्डलिया ।

थोरी जीवन जगत में आय रह्यो कलिकाल ।
तामहँ दुष्ट दरिद्र यह दाहत दीनदयाल ॥
दाहत दीनदयाल रात दिन सोचत बीतै ।
सो कस सहै कलेस पाइकै सुरतरु मीतै ॥
करि पुकार हरदत्त अहौं सरणागति तोरी ।
बिरद करो सम्भार नाथ ज्यहि होत न थोरी ॥ १८ ॥

झूलना ।

आशक होना सहल नहीं मरने से मुशकिल मानोगे ।
पल पल पर जीना मरना है तिस को क्योंकर पहिचानोगे ॥
चीज चमत्कारी न चले तहँ हाय हमेशै ठानोगे ।
श्रीयुगल अनन्य शरण आशक रस छानत २ छानोगे ॥
मुसकान चपल चितवनि अमोल मृदुबोल लोल चित चाहै ।
पीतबसन बनमाल लटक छबि जाल चाल अवगाहै ॥
चारुचिबुक बरबिन्दु इन्दु मनमोहन अकथ कथा है ।
श्रीयुगल अनन्य शरण कुंडल कल डोलनि हिया हरा है ॥

दोहा ।

नाम रटन निज नीचपण अगुण अधन सत्कार ।
श्रीयुगल अनन्य शरण किये पाये प्रभु दीदार ॥ २१ ॥

ज्ञान दोहावली दोहा ।

माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सब प्रभुता को पद गन्यो ढ्बो अरज पग मेर ॥ १ ॥
रन बन ब्याधि बिपत्तिमों बृथा डरै जनि कोय ।
जो रक्षक जननी-जठर सो हरि गयो न सोय ॥ २ ॥
मनुज बिबिध भेषज करत ब्याधि न छाड़त साथ ।
खग मृग बसत अरोग्य बन हरि अनाथ के नाथ ॥ ३ ॥
जो जाके बस में परै तासों कहा बसाय ।
ताको सुख दुख देत मों ईश्वर एक सहाय ॥ ४ ॥
बात बहत रबि तपत घन बरषत तरु फल हेतु ।
इच्छा ते ज्यहि ईश की करहु ताहिते हेतु ॥ ५ ॥
जाकी रक्षा जाहिबिधि हरि तैसी मति देत ।
दै चपेट बड़ बालकहिं लघुहिं गोद सब लेत ॥ ६ ॥
हरिइच्छा कहुँ दोष गुन गुनो दोष कहुँ होय ।
अगिनिदाह जिमि सरपतहिं जिमि जवास घन तोय ॥७॥
परत प्रतीति•न ईश मों ऐसिहु गति लखि सूध ।
मलपूरित तन बीच सों जो बिलगावत दूध ॥ ८ ॥
स्वारथ अरु परमारथहुँ तजत न लागत लाज ।
चोर होत हरि ओर उत इत निज करत अकाज ॥ ९ ॥
जेहिबिधि जासु निबाह हरि दीन बन्धु तस कीन ।
जलचारन जलखग कियो इतर कुटिलकरि दीन ॥ १० ॥
निज निज लायक लोकहित सकल कीन भगवान ।

दालि नाज द्विदल सकल रची एक दल आन ॥ ११ ॥
बरषा बरषत आग मों तपत शिशिर जटिआय।
दैवहु की गति एक नहिं नर की काह बसाय ॥ १२ ॥
कहत धरम आगे करब काल न देखत कोय।
बचे कूप खनि घर जरत परत धार बनबोय ॥ १३ ॥

कालगति।

काल आय जैसा परै तैसी मति सब होय।
लागे फागुन मास ज्यों लाज तजैं सब कोय ॥ १४ ॥
कालपाय कछु नहिं रहै कीन्हे कोटि उपाय।
पाकि साह नित सींचिये तबहूं जाय सुखाय ॥ १५ ॥
जनम मरण धन निधन मों काहू की न बसात।
होत जात सब काल बश जस तरुवर में पात ॥ १६ ॥
धन यौवन बिभुता बिपति जानि परत है धीर।
समय साथही जात है जिमि भादों को नीर ॥ १७ ॥
कालपाय सुख होत है नहिं कछु किये उपाय।
कोकिल बिचरत बन सदा हरषत ऋतुपति पाय ॥ १८ ॥
गिरि समुद्र छिति देवता अवसर पाय नसात।
मनुज देह जल फेन सम बृथा ताहि पछितात ॥ १९ ॥
धनपति नरपति देवपति स्वप्न समै जिमि होय।
झूठ होत जागे सकल जगसुख जानहु सोय ॥ २० ॥
मंत्र यंत्र भेषज किये काल जीति नो जात।
बड़े २ समरथ भये काह कोउ मरि जात ॥ २१ ॥

दानगति।

दान देत धन होत है संचित जात नसाय।
सरिता बहै भरी रहै थिर सर जात नसाय ॥ २२ ॥
एक दिहे बहु मिलत है दान लाभ को मूल।
मलिन पत्र दे तरु लहै नवपल्लव फल फूल ॥ २३ ॥
बलि दधीचि शिवि करन की कीरति सुनि सुनि कान।
तृण समान मन दान मों धन को काह प्रमान ॥ २४ ॥
दान देत धन घटत नहिं नहिं पावत अधिकात।
पश्चिम जल सूखे नहीं नहिं पूरब सरसात ॥ २५ ॥
खान दान तजि धन धरै परै हरै निजु तौन।
मधुमाखी आंखो लखी साखी भाखी कौन ॥ २६ ॥
निजहित परहित दान ते संचे युगल नसाय।
क्षणभंगुर तन धन धरत परत न खनहिं लखाय ॥२७ ॥
मान सहित निज वित्तसम तुरत दान जिन दीन।
सेवा बिन बिनकौं कविन दाता बरणन कीन ॥ २८ ॥
मान बड़ो करि दान लघु तुरत देय जो कोय।
बिन सेवा उपकार ते उत्तम दाता सोय ॥ २६ ॥
बहुत दान अरु मान लघु बहुदिन मों जिन कीन।
मध्यम दाता ताहि को सकल कविन कहि दीन ॥ ३० ॥
थोर दान सन्मान लघु सेवा कछुक कराय।
करै अधम दाता तिन्है भाषत बुध समुदाय ॥ ३१ ॥

कर्म्मगति ।

कर्महेतु हरि तन दियो ताते कीजै काज ।
दैव थापि आलस करै ताको होइ अकाज ॥ ३२ ॥
कैसो होय समर्थ कोउ बिनु उद्यम थकि जाय ।
निकट असन बिनु कर चले कहु किमि मुख मों जाय ॥
कीन्हें बिना उपाय कछु दैव कबहुँ नहिं देत ।
जोति बीज बोवै नहीं किमि कर जामै खेत ॥ ३४ ॥
कर्म करत फल होत है जो मन राखै धीर ।
श्रम कै खोदत कूप ज्यों थल मों प्रगटत नीर ॥ ३५ ॥
झूठ होत जो कर्मफल यह बिचारु मनमाहिं ।
दुखी सुखी भल पोच सब एकरङ्ग कस नाहिं ॥ ३६ ॥
आपु करै अपराध तो का पर सों बिरुझाहि ।
जीभि कटै निज दन्त ते कोह करै कहु काहि ॥ ३६ ।

स्वभाव गति ।

कैसो परै कुसङ्ग जो तजहि न सुजन सुभाय ।
तीनि टेढ़ कोदगड ते तीर सधि गति जाय ॥ ३८ ॥
सूध सूध ते सँग चलै साधु कुटिल ते नाहिं ।
सदा बसहिं सर सर सँगै धनुष पड़त उड़ि जाहिं ॥३६ ॥
सम रसाल तरु अरु सुजन खल बबूर इक बांट ।
ताड़तहूं वै देहिं फल सेवतहूं वै कांट ॥ ४० ॥
बर अचूक सर सों हनै कहै न कोउ कटु बात ।
यामें छन दुख होत है वामें नित अधिकात ॥ ४१ ॥

अधन चहत शत धन उतो सहस सों लछि नृप सोय ।
सो सुरेस सो बिधि सो हरि सो हर तुषित न कोय ॥४२॥
निज सुभाय छूटै नहीं कीन्हें कोटि उपाय ।
स्वान पूंछ सीधी करै फेरि कुटिल ह्वै जाय ॥ ४३ ॥
एक नखत दिन लगन कुल तिथि मों उपजे सांच ।
नहिं समान सब रूप गुण जिमि कर अङ्गुलि पांच ॥४४॥
शिशिर दुःख दिन दूबरो सोइ ग्रीषम सरसात ।
ताप करत चर अचर को बढ़े सबै इतरात ॥ ४५ ॥
बढ़ी निशा हिमि दुख करै सोइ ग्रीषम कृश होय ।
ताप हरत है जगत को बिपति साधु सब कोय ॥ ४६ ॥
बीना बानी नारि नर विद्या है हथियार ।
पुरुष मिलै जैसो इन्हैं तैसी लहै असार ॥ ४७ ॥
जो न होय कछु बुद्धि तो पढ़ब गुनब केहि काम ।
पढ़ो कीर मतिहीन ज्यों लै टेरत निज नाम ॥ ४८ ॥
आग भाग ते ऊख मों पोर पोर रस जोर ।
सुजनन प्रीति नीचें मों गनब नीच ते ओर ॥ ४९ ॥
को समरथ फिरि थिर करै प्रेम अनादर भङ्ग ।
गजमुक्ता फूटो जुरै काहू लाहू के रङ्ग ॥ ५० ॥
सुजन सोन अति अवचटे टूटहिं जुरहिं तुरन्त ।
खल माटी के घट सहज फूटहिं जुरहिं न अन्त ॥ ५१ ॥
खल फल पाके दारुणी भीतर केर मलीन ।
उपर खार अन्तर मधुर सुजन पनश कहि दीन ॥ ५२ ॥

हेतु होत दूरहु निकट निकट दूर बिन हेतु ।
लोचन लोचत निज चरन करन दीठि नहिं देतु ॥ ५३ ॥

निरदोषी संकित सदा दोषी हिये न हानि ।
बदन छुपावति कुलबधू बिश्वा चलति उतानि ॥ ५४ ॥

जाहि परे जानै सोई प्रीति करत नित भीति ।
ताप होत बिछुड़ेहु मिले ईहै बड़ी अनरीति ॥ ५५ ॥

खल जन बिनु काजहुं परे अवगुण करैं बिचारि ।
सर सरिता यद्यपि भरे काग पिअहिं घटवारि ॥ ५६ ॥

नीतिगति ।

कलह कण्डु मद द्यूत रति अशन शयन परनारि ।
बैर प्रीति ये दश बढ़ैं सेवा की अनुहारि ॥ ५६ ॥

देश-अटन बुध मित्रता बारनारि सों प्रीति ।
शास्त्रश्रवण नृप-सभागति पाँच चतुरता नीति ॥ ५८ ॥

खाय खवावे देय कछु लेय कछुक लखि रीति ।
गुप्त बात पूंछैं कहैं षट लक्षण हैं प्रीति ॥ ५९ ॥

काज लागि सुजनौ करहिं खलहू केर सुपास ।
सींचत खार गुलाब के कुसुम बास की आस ॥ ६० ॥

खलजन के संग्रह बिना कहुँ अकाज ह्वै जाय ।
जौ न कांट संचै करै खरौ खेत चरि जाय ॥ ६१ ॥

निज करनी बिनु मनुज को वृथा जन्म तनरूप ।
जिमि अजगल थन गज दशन स्वान पूंछ शिशुभूप ॥ ६२ ॥

शान्ति-वचन सुनि कुपित जन कोप करहिं अधिकाय।
अति तोपित घृत तेल ज्यों बारि परत जरिजाय॥ ६४॥
सुजन-बचन अरु गज-दशन निकरि फेरि पैठे न।
बार बार उगिलत गिलत कमठ कण्ठ शठ बैन॥ ६४॥
देवा मेवा सुजन-जन सेवा से फल देत।
लखत कन्द तरु मन्द नरु इन्हैं खने कछु लेत॥ ६५॥
अगिनि-दाह अति दुख नहीं नहिं दुख अति घनघाय।
गुंजा के सँग तोलिबो मो दुख सहो न जाय॥ ६६॥
काज सरे नहिं और को काह करै बलशील।
मिलगावत शिकता सिता मिले पिपीलि न पील॥ ६७॥
कहा करै बहुरूप गुण जासों मन नहिं लीन।
राखै मधु घृत दूध मों जल बिनु मनि मलीन॥ ६८॥
देश मोह रुज अलस भय तिय सेवा सन्तोष।
सहजहि मिलै महत्व जो ये न होंहि षट दोष॥ ६९॥
गुण अवगुण तस लखि परै जस जासो मन लीन।
कमल मुदित रवि तापहूं निराखि सुधाकर दीन॥ ७०॥
पुत्र चीन्हिये वृद्धई दुरादिन परे कलत्र।
काज परे सब को लखिय बिपति चीन्हिये मित्र॥ ७१॥
एक एक अच्छर पढ़ै एक एक तजि देय।
आदिहि दोहा नाम कुल देश ग्राम लखि लेय॥ ७२॥
सम्बत् एक सहस सहित नोसै तीनि समेत।
रची ज्ञानदोहावली चैत पंचमी श्वेत॥ ७३॥

इति ज्ञानदोहावली समाप्ता।

दोहा ।

कागा सब तन खाइयो चुनि चुनि खैयो मास ।
ये नैना जनि खाइयो पिया मिलन की आस ॥ १ ॥
अली मान तजि सेइये हिलि मिलि प्यारो कन्त ।
सब जग मनभायो भयो हाकिम नयो बसन्त ॥ २ ॥
बल्लभ बल्ली प्रेम की तिलै तिल चढै समाय ।
ज्वाल जाल ते नाहिं जरै कपट लपट जरिजाय ॥ ३ ॥
मीन काटि जल धोइये खाये अधिक पियास ।
तुलसी ऐसी प्रीति है मुयहु मीत की आस ॥ ४ ॥
तुलसी जप तप नेम व्रत सब सबही ते होय ।
नेह निबाहन एक रस जानत बिरलै कोय ॥ ५ ॥

इति कविवचनसुधा समाप्ता ॥